॥ श्रीः ॥

वाराणसी का आधिदैविक वैभव

कुबेरनाथ सुकुल
कालभैरव, वाराणसी
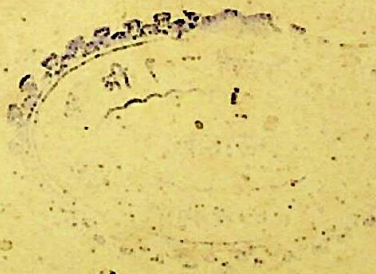
सं० २०२५ वि०

श्रीः

ऊरूक्रमं विश्वकर्माणमीशं जगत्सृष्टारं धर्मदृश्यं वरेण्यम् ।
तं सर्वं त्वां धृतिमद्धामदिव्यं विश्वेश्वरं भगवन्तं नमस्ये ॥

प्रस्तावना

भगवान् विश्वनाथ की महती कृपा से वाराणसी के सुप्रख्यात तीर्थों की सूची प्रकाशित करते हुए हमको अपार हर्ष होता है । वाराणसी में एक सहस्र से अधिक तीर्थों का नामोल्लेख पुराणों में मिलता है परन्तु काल के विपर्यय से उनमें से प्रायः तीन सौ तीर्थों का पता ठिकाना बीस वर्षों के सतत प्रयत्न से भी नही लग पाया । इनमें से बहुत से तो लुप्त हो गए हैं परन्तु बहुत्त से अभी भी विद्यमान हैं जिनके नाम जनमानस भूल गया है । उनका पता लगाने का प्रयत्न अभी भी चल रहा है और इस पुस्तिका के द्वितीय संस्करण में आगे होने वाली उपलब्धि भी पाठकों की सेवा में यथासमय प्रस्तुत की जायगी ।

इस कार्य में इतने लोगों की सहायता मिलती रही है कि उनको व्यक्तिगत रूप से घन्यवाद देना सम्भव नहीं है किन्तु गोयनका पुस्तकालय के अध्यक्ष पं० श्रीकृष्ण जी पन्त की कृपा के बिना यह काम सम्भव ही नहीं था अतएव उनके हम अत्यन्त आभारी हैं ! पं० मुरलीधर पाण्डेय तथा पं० लक्ष्मी कृष्ण जी गोर की भी हमपर इस सम्बन्ध में अनन्य कृपा रही है । उनको भी धन्यवाद देना हमारा धर्म है । चिरंजीवी ज्वालाप्रसाद मिश्र ने इस कार्य में जितना परिश्रम किया है वह स्तुत्य है । वे हमारे शिष्य हैं इसलिये उनको धन्यवाद देना अनुचित होगा अतएव उनको आशीर्वाद देकर ही सन्तोष करना पड़ता है ।

वाराणसी के धार्मिक इतिहास तथा आधिदैविक भूगोल का विस्तृत विवेचन भी एक स्वतंत्र ग्रंथ में किया गया है जो आशा है शीघ्र ही प्रकाशित होगा ।

भगवान् विश्वनाथ सभी का कल्याण करें ।

अनन्त चतुर्दशी
सं० २०२५ वि०
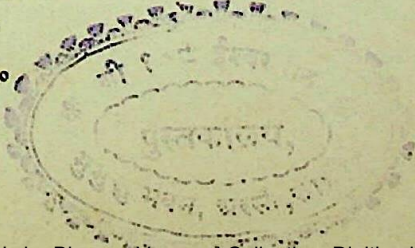
कुबेरनाथ सुकुल

श्रीः

वाराणसी के सुविख्यात देवायतनों तथा तीर्थों का स्थाननिर्देश

अग्निजिह्व वेताल—वृद्धकाल के पास मकान नं० के ५३/३२ में शिवलिंग।
अग्निजिह्व वेतालकुंड—वहीं पर लुप्त।
अग्नितीर्थ—अग्नीश्वर घाट पर।
अग्नीश्वर—अग्नीश्वर घाट के ऊपर गली में मकान नं० सीके २/३ में। अपने प्राचीन स्थान स्वर्लीनेश्वर के समीप मकान नं० ए १२/२ में भी वर्तमान।
अग्नीश्वर द्वितीय—(आग्नीध्रेश्वर)—जागेश्वर नाम से प्रसिद्ध नरहरिपुरा में के० ६६/४ में; कुंड ईश्वरगंगी।
अगस्त्य कुंड—अगस्त्यकुंडा महल्ले में प्रतीकरूप से।
अगस्त्येश्वर—वहीं मकान नं० डी० ३६/११ में।
अत्युग्र नरसिंह—कलशेश्वर के पश्चिम गोमठ में। मकान नं० सीके ८/२१।
अनारकह्लद (अमरकह्लद-कृ०)—अमरैया तालाव। लाटभैरव के समीप।
अनारकेश्वर(अमरकेश्वर) वहीं पर, अब लुप्त।
अप्सरसेश्वर—ज्ञानवापी मस्जिद की सीढ़ियों के सामने खिड़की में छोटा शिवलिंग।
अभयद विनायक—दशाश्वमेध पर शूलटंकेश्वर के मंदिर में मकान नं० डी० १७/१११ के नीचे।
अमृतेश्वर—स्वर्गद्वारी पर मकान नं० सीके० ३३/२८ में नीचेवाला शिवलिंग।
अमृतेश्वरी—वहींपर कुंए के ऊपर।
अम्बिका गौरी—रत्नेश्वर के पास मकान नं० के० ५३/३८ में लुप्त।
अम्बिकेश्वर—वहीं। वर्तमान नाम मानकेश्वर।
अम्बरीषेश्वर—केदार मंदिर में अब लुप्त।

अमरेश्वर—लोलार्क के पास मकान नं० वी २/२० में।

अयोगंधकुंड—पुष्कर नाम से प्रसिद्ध। पहले ओंकार क्षेत्र में। अब मुमुक्षु भवन के सामने।

अयोगंधेश्वर—वहीं।

अर्कविनायक—लोलार्क के समीप घाट के ऊपर मकान नं० वी २/१७ के सामने।

अरुणादित्य—त्रिलोचन मंदिर में।

अरुन्धती तीर्थ—चौसट्टी घाठ के उत्तर में गंगाजी में।

अवधूत तीर्थ—पशुयतीश्वर के पश्चिम। इसी कुंड को पाट कर पशुपतीश्वर महल्ला बसा है। इसका पश्चिमीय तट वर्तमान लाजपत रोड के समीप था।

अवधूतेश्वर—पशुपतीश्वर मंदिर के सामने के मकान नं० सीके १३/८५ में। वहीं पर अवधूत तीर्थ का प्रतीक कुण्ड भी है।

अवभ्रातकेश्वर—नारद घाट के समीप 'विभ्राटकेश्वर' नाम से प्रसिद्ध।

अविमुक्त विनायक—विश्वनाथ मंदिर में नैऋण्यकोण के छोटे मन्दिर में गौरी तथा विष्णु के समीप।

अविमुक्तेश्वर—वाराणसी का सबसे पुनीत शिवलिंग। इस समय दो मन्दिर हैं। एक तो विश्वनाथ जी के घेरे में आग्नेग कोण का छोटा मन्दिर और दूसरा ज्ञानवापी मस्जिद की सीढ़ियों के सामने खिड़की में वड़ा शिवलिंग। पास का छोटा शिवलिंग अप्सरसेश्वर का है।

अविमुक्तेश्वर तीर्थ—मणिकर्णिका घाट और ललिता घाट के बीच के तीर्थों में से एक।

अशोक तीर्थ—इसका दूसरा नाम विलोक तीर्थ था जो भरने पर विलोकनाल हुआं जिसका अपभ्रंश वुलानाला हुआ। इसको पाट कर वुलानाला का महल्ला वसा।

अश्वारूढ़ा—वागेश्वरी के मंदिर में चौक में आले पर। जैतपुरा महल्ला मकान नं० जे० ६/३३ में।

असितांग भैरव—वृद्धकाल के घेरे में सर्वेश्वर के मन्दिर की दीवाल में। मकान नं० के० ५२/३९।

अस्थिक्षेप तड़ाग—बेनियापार्क के तालाव का वह अंश जिसको पाट कर हड़हा महल्ला वसा है।

असिसंभेद तीर्थ—अस्सी संगम। प्रसिद्ध।

अत्रीश्वर—नारदघाट के समीप मकान नं० डी० २५/११ में; पहला स्थान गोकर्ण के समीप लुप्त ।

आदिकेशव—वरणा संगम के समीप । प्रसिद्ध ।

आदित्य केशव—आदिकेशव के पास ।

आदित्य केशव तीर्थ—आम्बरीष तीर्थ तथा दत्तात्रेयेश्वर तीर्थ के बीच में । राजघाट के किलेके सामने ।

आनुसूयेश्वर—वर्तमान स्थान नारदघाट के ऊपर मकान नं० डी २५/११में ।

आपस्तंवेश्वर—१–बूढ़े बाबा के नाम से प्रसिद्ध । मकान नं० के० ५३/११६ के सामने मध्यमेश्वर महल्ले में । २–मध्यमेश्वर के दक्षिण के शिवालयमें बड़ा शिवलिंग ।

आम्बरीष तीर्थ—राजघाट किलेके मध्य भाग के सामने गंगाजी में ।

आमर्दकेश्वर—काठ की हवेली के पीछे मकान नं० के० ३०/४ में काल-माधव के सामने ।

आशापुरी देवी—मैदागिन तालाब के उत्तर मकान नं० के० ५६/१६ में मैदागिन बगीचे से सटी हुई ।

आशा विनायक—मीरघाट पर महावीरजी के मंदिर में मकान नं० डी० ३/७६ में।

आश्विनेयंश्वरौ—गंगामहल के पास मकान नं० सीके० २/२६ में ।

आषाढ़ीश्वर—दोस्थान हैं । एक रानी बेतिया के मन्दिर के पास काशीपुरा में । दूसरा भारभूतेश्वर के समीप मकान नं० सीके० ५४/२४ में ।

इन्द्रद्युम्न तीर्थ—रामघाट से मिला हुआ गंगाजी का भाग उत्तर की ओर ।

इन्द्रद्युम्नेश्वर—वहीं । लुप्त ।

इन्द्रेश्वर (प्रथम)—मणिकर्णिका घाट पर तारकेश्वर के समीप ।

इन्द्रेश्वर (द्वितीय)—कर्कोटक वापी (नागकुंआ) के उत्तर अब लुप्त । वर्त-मान मकान नं० बी० २७/६२ के सामने ।

इन्द्रेश्वर कुंड—वहीं पर गड़हा जो अब भर गया है ।

ईक्ष्वाकु तीर्थ—रामघाट के दक्षिण मिला हुआ गंगाजी में ।

ईशान तीर्थ—मणिकर्णिका तथा ललिता घाट के बीच के १३ तीर्थों में से सातवाँ तीर्थ ।

ईशानेश्वर—बांसफाटक सिनेमा के उत्तर की गली में । मकान नं० सीके० ३७/४३ में ।

उग्रलिंग—लोलार्क के समीप ।

उग्रेश्वर—पहले ओंकार क्षेत्र में। अब लक्ष्मीकुंड पर।

उटजेश्वर—दीनानाथ के गोला में।

उतथ्यवामदेव—मणिकर्णिका घाट पर मणिकर्णीश्वर के उत्तर पितामहेश्वर में। मकान नं० सी के० ७/६२ में।

उत्तरार्क—अलईपुरा में वकरिया कुंडके समीप लुप्त; वकरिया कुंड उत्तरार्क कुंड ही है।

उद्दालकेश्वर—पहले ओंकार क्षेत्र में—लुप्त। अब लोलार्क के समीप।

उद्दंड मुंड विनायक—त्रिलोचन महादेव के घेरे में वाराणसी देवी के समीप।

उद्दंडविनायक—पंचक्रोशी में रामेश्वर के पास भुइली गाँव में।

उन्मत्त भैरव—पंचक्रोशी के रास्ते में देउरा गाँव में।

उपशांत शिव—पहले भदऊँ महल्ले में। अब अग्नीश्वर के पास मकान नं० सीके० २/४ में।

उमातीर्थ—मणिकर्णिका घाट पर चक्रपुष्करिणी के उत्तर सटा हुआ गंगाजी में। ऊपर उमादेवी मकान नं० सीके० ७/१०२ में अम्वादेवी नाम से प्रसिद्ध।

उर्वशीकुंड—औसानगंज में वाबू शिवनारायण सिंह के मंदिर के उत्तर। अब पट गया।

उर्वशीश्वर—वाबू शिवनारायण सिंह के मंदिर में पीपल के नीचे। मकान नं० जे० ५६/१०८ में।

ऊर्ध्वरेता—कूष्मांडविनायक के समीप फुलवरिया गाँव में।

ऋणमोचन तीर्थ—लड्डू गड़हा। स्ट्रीथफील्ड रोड के पूर्व की ओर।

ऋष्यशृंगेश्वर—लक्ष्मीकुंड पर काली मठ में लुप्त। शृंगी ऋषि की मूर्ति वर्तमान। मकान नं० डी० ५२/३५।

एकदंत विनायक—वंगाली टोला में पुष्पदंतेश्वर के पास। पहले सम्भवत: कुछ और दक्षिण।

ऐश्वर्येश्वर—कचौड़ी गली में मकान नं० के० ३४/६० में दुर्मुख विनायक के सम्मुख।

ओंकारेश्वर
अकारेश्वर
उकारेश्वर
मकारेश्वर
विन्दु — मछोदरी के उत्तर पठानीटोला के पास हुक्कालेसन (ओंकारेश्वर का अपभ्रंश) महल्ले में टीले के ऊपर प्रसिद्ध। पहले यहाँ पाँच मंदिर थे जिनको पंचोंकार कहते थे। अब केवल तीन हैं। अकारेश्वर ए० ३३/२५ में, मकारेश्वर ए० ३३/४७ में तथा नादेश्वर अथवा ओंकारेश्वर ए० ३३/२३ में टीले के ऊपर। उकारेश्वर तथा विंदु लुप्त हो गए हैं।

अंगारक तीर्थ—अग्नीश्वर घाट से मिला हुआ दक्षिण में गंगाजी में।

अंगारेश्वर—आत्मावीरेश्वर के मंदिर में दालान में। मकान नं० सीके० ७/१५८।

अंगारेश्वर द्वितीय—ऋणमोचन के दक्षिण अब लुप्त।

अंगारेश्वरकुंड—ऋणमोचन के पास। लुप्त।

अंगारेश्वर तृतीय—मुकुट कुंड के समीप। लुप्त।

अंगारेशी चंडी—(१) मुकुट कुंड पर पंचकौडी देवी के नाम से वर्तमान स्थान, मकान नं० बी० २७/२०। (२) कामाक्षापर अनजानी देवी के नाम से।

अंगिरसेश्वर—(१) जंगमवाड़ी में मकान नं० डी० ३५/७७ में। (२) स्वर्गद्वारी में मकान नं० सी के० १०/१६ में।

अंतकेश्वर—वृद्धकाल के घेरे में। मकान नं० के० ५२/३९।

कचेश्वर—शुक्रेश्वर मन्दिर का छोटा शिवलिंग मकान नं० डी० ८/३०।

कपर्दि विनायक—पिशाचमोचन पर। मकान नं० सी० २१/४०।

कपर्दीश्वर—पिशाचमोचन पर। मकान नं० सी० २१/४०।

कपालमोचन तीर्थ—ओंकारेश्वर के टीले के ठीक पश्चिम मिला हुआ तालाब जिसको रानीभवानी ने पक्का करवाया यही कपाल मोचन तीर्थ है। लाट-भैरव का तालाब भैरवतीर्थ अथवा दंडपाणिभैरवतीर्थ है। कपालमोचन ऋणमोचन के दक्षिण होना चाहिए। लाटभैरव उत्तर में हैं।

कपाली भैरव—पुराना स्थान तक्षककुंड के उत्तर में था। वहाँ लुप्त। आज-कल लाटभैरव की पूजा होती है।

कपालीश्वर—प्राचीन स्थान कपालमोचन पर। अब लुप्त।

कपिलाह्रद—वरुणा पार कोटवा गाँव में। कपिलधारा प्रसिद्ध।

कपिलेश्वर—प्राचीन स्थान–ओंकारेश्वर का ही नाम। दूसरी स्थापना चौखंभा के पास कपिलेश्वर गली में मकान नं० के० २९/१२ में।

कपिलेश्वर द्वितीय—विश्वनाथ मंदिर के घेरे में वायव्यकोण के छोटे मंदिर में निकुंभ के पास गर्त में।

कम्बलाश्वतर तीर्थ—मणिकर्णिकेश्वर के उत्तर गंगाजी में।

कम्बलाश्वतरेश्वर—मणिकर्णिकेश्वर के समीप। मकान नं० सीके० ८/१४।

कर्कोटक नाग—नागकुआ पर। मकान नं० जे० २३/२०६।

कर्कोटक वापी—नाग कुँआ नाम से प्रसिद्ध। मकान नं० जे० २३/२०६।

कर्कोटकेश्वर—नाग कुंआ पर। मकान नं० जे० २३/२०६।

कर्णादित्य—राजमंदिर में मकान नं० के० २०/१४७ में।

कर्णादित्य तीर्थ—शीतला घाट तथा राजमंदिर के नीचे की गंगा में।

करवीरेश्वर—वर्तमान स्थान मकान नं० डी० ५२/४१ लक्ष्मीकुंड पर।

करुणेश्वर—ललिता घाट के समीप मकान नं० सी के० ३४/१० में।

करुणेश्वर द्वितीय—लिपि प्रमाद से वरुणेश्वर का नाम विगड़ कर करुणेश्वर हो गया। वरुणेश्वर देखिए।

करंधमेश्वर—लोलार्क के दक्षिण।

कलतीर्थ—संकटा घाट के उत्तर गंगा में। कक्शशेश्वर का प्राचीन मंदिर यहीं कहीं था।

कलशेश्वर—कश्मीरीमल की हवेली के पीछे ब्रह्मपुरी में। मकान नं० सीके० ७/१०६।

कलिकालेश्वर—चन्द्रेश्वर के मंदिर के सामने की दालान में कोने में गर्त में। मकान नं० सीके० ७/१२४।

कलिंदमेश्वर—कालमर्दनेश्वर नाम से काठ की हवेली के पीछे मकान नं० के० ३२/३३ में।

कलिप्रियविनायक—साक्षीविनायक पर मनःप्रकामेश्वर में। मकान नं० डी० १०/५०।

कश्यपेश्वर—जंगमवाड़ी में मकान न० डी० ३५/७७ में।

कहोलेश्वर—इनका प्रथम स्थान ज्येष्ठस्थान में था वहाँ अभी भी मकान नं० के० ६३/२२ में हैं परन्तु अव ये कमक्षा के समीप भी हैं।

कामकुण्ड—कामेश्वर के दक्षिण पहले एक कुण्ड था जिसका नाम कामकुण्ड था।

कामेश्वर—इस समय इनके दो मंदिर हैं। एक तो प्राचीन स्थान पर प्रसिद्ध और दूसरा घासीटोले की गली के कोने पर मकान नं० के० ३०/१ में।

कालगंगातीर्थ—रामघाट से मिला उत्तर की ओर गंगा में तीर्थ। इसके उपर पेड़ के नीचे सीढ़ियों पर कालविनायक हैं।

कालभैरव—इनका प्रथम स्थान ओंकारेश्वर के पश्चिम कपालमोचन सरोवर के तट पर था। तेरहवीं शताब्दी के आसपास इनकी पुनः स्थापना इनके वर्तमान स्थानपर हुई। प्रसिद्ध। मकान नं० के० ३२/२२।

कालमाधव—काठकी हवेली के पीछे मकान नं० के ३०/४ में। वहीं आमर्दकेश्वर भी हैं।

कालविनायक—रामघाट की सीढ़ियों पर पेड़ के नीचे मकान नं० के० २४/१० के द्वार पर।

कालेश्वर—दंडपाणि गली में दंडपाणिभैरव के मंदिर मकान नं० के० ३१/४६ में। अपने प्रथम स्थान पर इन्हीं का नाम वृद्धकालेश्वर हो गया है।

कालेश्वर द्वितीय—वरणा संगम पार। इनकी स्थापना काल नामक शिवगण ने किया था।

कालोदक कूप— वृद्धकालका प्रसिद्ध कुँआ। मकान नं० के० ५०/३६ में।

कालंजरेश्वर—केदार क्षेत्र में।

कांचन वट—धर्मकूप के पास जिसके नीचे सावित्री की मूर्ति हैं। मकान नं० डी० २/१५।

किरातेश्वर—भारभूतेश्वर के पास। मकान नं० सी के० ५२/१५ में गुप्तेश्वर नाम से प्रसिद्ध।

किरातेश्वर द्वितीय—शिवगण द्वारा स्थापित। केदारेश्वर के दक्षिण लाली घाट पर जयंतेश्वर के समीप।

कीकसेश्वर—हड़हा महल्ले में मकान नं० सी के० ४८/४५ में।

कुक्कुटेश्वर—पहला स्थान ज्येष्ठस्थान। अब दुर्गाजी के घेरे में दुर्गाकुण्ड पर मकान नं० बी० २७/२।

कुक्कुटेश्वर द्वितीय—वक्रतुण्डविनायक के समीप चौसट्टी घाट के पास मकान नं० डी० २०/१८ में।

कुण्डोदरेश्वर—अस्सी संगम के पास अस्सीघाट पर गंगा तट पर वालू में दवे हुए।

कुन्तीश्वर—इनका प्राचीन नाम कुम्भीश्वर है। वरणासंगम के पार मंदिर है।

कुब्जादेवी—पितामहेश्वर के मंदिर में शीतला नाम प्रसिद्ध। मकान नं० सी के० ७/९२ शीतला गली में।

कुलस्तंभ—लाटभैरव का नाम। प्रसिद्ध।

कुवेरेश्वर—इनके दो स्थान कहे जाते हैं। (१) विश्वनाथ के घेरे में विश्वनाथजी के उत्तर कटेहरे में। (२) अन्नपूर्णाजी के मंदिर में ईशान कोण में।

कूटदंत विनायक—कृमिकुण्ड पर सिद्धेश्वर मंदिर में मकान नं० बी० ३/३३५।

कूणिताक्ष विनायक—लक्ष्मीकुण्ड पर महालक्ष्मी के मंदिर के पास मकान नं० ५२/३८।

कूष्मांड विनायक—फुलवरिया गाँव में।
कूष्मांडेश्वर—स्वर्गद्वारी पर।
क्रतुवाराह—देखिए यज्ञवाराहकेशव।
कृत्तिवासेश्वर—प्राचीन स्थान पर मस्जिद; वर्तमान मंदिर रत्नेश्वर के पूर्व मकान नं० के० ४६/२३ में।

कृत्वीश्वर—कोनिया घाट के ऊपर वरणा पार पाकर वृक्ष के नीचे।
कृष्णेश्वर—संकठा मंदिर की दीवाल में हरिश्चन्द्रेश्वर के सामने मकान नं० सी के० ७/१५९।
केदारेश्वर—केदारघाट पर प्रसिद्ध। मकान नं० बी० ६/१०२। प्राचीन पुनः स्थापना आत्मावीरेश्वर के समीप बृहस्पतीश्वर मंदिर में हुई थी। वहाँ भी वर्तमान मकान नं० सी के० ७/१३३ में।
केशवादित्य—वरणा संगम पर आदिकेशव मंदिर में।

कोटीश्वर—प्राचीन स्थान शैलेश्वर के दक्षिण—लुप्त। पुनः स्थापना त्रिलोचन मंदिर में तथा साक्षीविनायक के समीप गली में मकान नं० डी० १०/४९ में।
कोलाहल नृसिंह—गोमठ के पास मकान नं० सीके० ८/१८९ में।
कङ्काल भैरव—गोमठ की दीवाल में। रुरुभैरव नाम से प्रसिद्ध मकान नं० सीके० ८/२१।
कंदुकेश्वर—सप्तसागर भूतभैरव महल्ले में मकान नं० के० ६३/२९ में।
क्रोधन भैरव—कमक्षा महल्ले में कामक्षादेवी के मंदिर में। मकान नं० बी० २१/१२३।

खखोल्कादित्य—कामेश्वर महादेव के द्वार पर।
खर्व नृसिंह—दुर्गाघाट के ऊपर की नृसिंह की मूर्ति। मकान नं० के० २२/५३।
खर्व नृसिंह तीर्थ—दुर्गाघाट के सामने गंगाजी में।
खर्व विनायक—आदिकेशव के समीप किले में।
गजकर्ण विनायक—कोतवालपुरा में ईशानेश्वर के मंदिर में। मकान नं० सीके० ३७/४३।

गज विनायक—राजादरवाजे के पास भारभूतेश्वर के मंदिर में। मकान नं० सीके० ५४/४४ के पूर्व।
गणनाथ विनायक—ढुंढिराज गली के किनारे मकान नं० सीके० ३७/१ में।
गदा तीर्थ—आदिकेशव के सामने गंगाजी में।

गभस्तीश्वर—मंगलागौरी के मंदिर में। मकान नं० के० २८/३४।

गरुड़तीर्थ—आदिकेशव के सामने गदातीर्थ से कुछ दक्षिण।

गरुड़ेश्वर—प्रथम स्थान कामेश्वर के समीप लुप्त। अब देवनाथपुरा में मकान नं० डी० ३१/३६-ए में।

गिरि नृसिंह—देहली विनायक के समीप।

गोकर्णसरोवर—इसको पाटकर गोकर्ण का महल्ला बसा था जिसका नाम अब काजीपुरा हो गया है।

गोकर्णेश्वर—काजीपुरा महल्ले में सड़क पर मकान नं० डी० ५०/३८-ए के दक्षिण। वहीं कूप भी है।

गोपी गोविंद—प्राचीन स्थान राजघाट किले में दक्षिण ओर। अब मकान नं० के० ४/२४ में लालघाट पर।

गोपीगोविंदतीर्थ—राजघाट के किले के मध्यभाग के सामने गंगाजी में।

गोप्रतारेश्वर तीर्थ—प्रह्लादघाट के दक्षिण गंगाजी में। गोप्रतारेश्वर लुप्त।

गोप्रेक्षेश्वर—प्राचीन स्थान राजघाट के किले के दक्षिण भाग में मध्य में गोपीगोविंद के समीप : वर्तमान गोपीगोविंद के मन्दिर में लालघाट पर मकान नं० के० ४/२४।

गोव्याघ्रेश्वर—दशाश्वमेध घाट पर। उनके सामने गंगाजी में गोव्याघ्रेश्वर तीर्थ।

गौतमेश्वर—गोदौलिया (गौतम कुंड—लुप्त) पर काशिराज के शिवाले के घेरे में पीछे की ओर। मकान नं० डी० ३७/३३।

गौरीकुण्ड—केदारघाट पर कुण्ड। इसी का नाम हरं पाप वह गंगाजी में केदारघाट पर है। प्रतीकात्मक कुण्ड घाट पर भी हैं।

गौरीकूप—काशीपुरा में काशी देवी के मंदिर के दक्षिण का कुँआ। इसका दूसरा नाम अप्सरस कूप भी है।

गंगाकेशव—वर्तमान स्थान ललिताघाटपर मकान नं० डी० १/६७ में। प्राचीन स्थान चौसट्टी घाट के दक्षिण गंगामहलघाट पर लुप्त।

गंगाकेशवतीर्थ—गंगामहल घाट।

गंगादित्य—ललिताघाट पर मकान नं० डी० १/६७ में।

गंगेश्वर—ज्ञानवापी के पूर्व पीपल के नीचे लुप्त। (२) पशुपतीश्वर के पूर्व मकान नं० सीके० १३/७६ में।

गंधर्व सरोवर—नागकुँआ के पश्चिम का कुण्ड। समीप के गंधर्वेश्वर लुप्त।

घंटाकर्णगण—कर्णघंटा तालाव के दक्षिण। पानी भर जाने से अब लुप्त। मकान नं० के ६०/६७ में।

घंटाकर्णह्रद—कर्णघंटा तालाव। प्रसिद्ध मकान नं० के० ६०/६७ में।

घंटकर्णेश्वर—कुएँ के पास कण्ठेश्वर नाम से अब प्रसिद्ध। मकान नं० के० ६०/६७ में।

चक्रतीर्थ—आदिकेशव के सामने गंगाजी में।

चतुर्दन्तविनायक—ध्रुवेश्वर के मंदिर में।

चतुर्मुखेश्वर—वृद्धकाल के घेरे में। मकान नं० के० ५२/३६।

चतुर्वक्त्रेश्वर—सकरकन्दगली में मकान नं० डी० ७/१६ में।

चतुःसागरवापी—काशीपुरा की सड़क पर का कुंआं।

चर्चिका देवी—पंचगंगेश्वर से मंगलागौरी जाते हुए सीढ़ी चढ़ते ही मकान नं० के २३/७२ में।

चंड भैरव—दुर्गाजी के घेरे में काली जी के मन्दिर में। मकान नं० बी० २७/२।

चंडीचंडीश्वर—कालिका गली में मकान नं डी० ८/२७ में पुरानी भग्न तथा नवीन दोनों मूर्तियाँ हैं।

चंडीश्वर—सदर बाजार में चंडी देवी के मंदिर में।

चन्द्रकूप—सिद्धेश्वरी महल्ले में मकान नं० सीके० ७/१२४ में।

चन्द्रेश्वर—चन्द्रकूप के समीप उसी मकान नं सीके० ७/१२४ में।

चामुंडादेवी—भदैनी में। लोलार्क के पास अर्कविनायक के मन्दिर में; चामुंडा मुंड रूपिणी।

चित्रकूप—चित्रगुप्तेश्वर में राजादरवाजे के समीप मकान नं० सीके० ५७/७७ में।

चित्रगुप्तेश्वर—राजादरवाजे के समीप। मकान नं० सीके० ५७/७७ में। चित्रगुप्तकी भी मूर्ति।

चित्रग्रीवा देवी—केदारेश्वर के समीप। मकान नं० बी० १४/११८ में भग्नावस्था में।

चित्रघंट विनायक—इनके दो स्थान कहे जाते हैं: (१) रानीकुँआँ पर सड़क के किनारे मकान नं० सीके० २३/२५ के पास छोटे संगमर्मर के मन्दिर में, तथा (२) जगन्नाथदास वलभद्रदास की दूकान के चबूतरे पर मकान नं० सीके० ३६/७४-७६ में।

चित्रघंटा देवी—लखीचौतरे के सामने गली में मकान नं० सीके० २३/३४ में।

चित्रांगदेश्वर—केदारेश्वर के समीप मकान नं० बी० १४/११८ में चित्रग्रीवा देवी के साथ ही।

चिंतामणि विनायक—सेंधियाघाट के ऊपर वशिष्ठवामदेव के मन्दिर के द्वार पर मकान नं० सी०के० ७/१६१।

चिंतामणि विनायक द्वितीय—ईसरगंगी महल्ले में जागेश्वर मन्दिर की वाहरी दीवाल में। मकान नं० के० ६६/४।

चिंतामणि विनायक तृतीय—देखिये लम्बोदर विनायक।

छागलेश्वर—पितृ कुण्ड पर। मकान नं० सी० १८/५२।

छागवक्त्रगण—कपिलधारा पर छागवक्रेश्वरी मन्दिर में।

छागवक्त्रेश्वरी देवी—कपिलधारा पर।

जटीश्वर—पातालेश्वर नाम से प्रसिद्ध मकान नं० डी० ३२/११७ के द्वार पर।

जनकेश्वर—वृद्धकाल के घेरे में। मकान नं० के० ५२/३९ में।

जनकेश्वर द्वितीय—दुर्गाकुण्ड के पश्चिम सुकुलपुर में अत्यन्त प्राचीन मूर्तियों के साथ।

जमदग्नीश्वर—कालभैरव के पूर्व मकान नं० ३२/५६ में।

जम्बुकेश्वर—बड़े गणेश पर मकान नं० के० ५८/१०३ में।

जयन्तलिंग—केदारेश्वर के दक्षिण लालीघाट पर।

जयन्तेश्वर—भूतभैरव पर।

जरासंधेश्वर—मीरघाट पर मकान नं० डी० ३/७९ में। प्राचीन स्थान लुप्त।

जरासंधेश्वर तीर्थ—मीरघाट पर गंगाजी में।

जललिंग—मणिकर्णिका श्मशान पर जलशायी घाट के सामने गंगाजी के भीतर। चितास्थ शव का रुद्रांश इनको ही अर्पित होता है।

जानकी कुंड—सीताकुण्ड नाम से प्रसिद्ध लक्सा महल्ले में।

जांगलेश्वर—मुकुटकुण्ड पर अथवा दुर्गाजी के मन्दिर में। अब लुप्त। अथवा कामक्षा पर अज्ञात।

जैगीषव्य गुहा—जागेश्वर के दक्षिण मठ में। मकान नं० जे० ६६/३।

जैगीषव्येश्वर—जैगीव्येव्य गुहा के द्वार पर मकान नं० जे० ६६/३ में।

ज्येष्ठविनायक—ज्येष्ठेश्वर के मन्दिर में। सप्त सागर महल्ला। मकान नं० के० ६२/१४४।

ज्येष्ठागौरी—मकान नं० के० ६३/२४ में भूतभैरव पर ।
ज्येष्ठावापी—इसी स्थान पर । लुप्त ।
ज्येष्ठेश्वर—ज्येष्ठ विनायक के समीप मकान नं० के० ६२/१४४ में ।
ज्योतिरूपेश्वर—मणिकर्णीश्वर के समीप काकाराम की गली में ।
ज्वालामालीनृसिंह—कपिलधारा के समीप कोटवा गाँव में ।
ढुंढि तीर्थ—ढुंढिराज के दक्षिण लुप्त । गंगाजी में भी ।
ढुंढिराज विनायक—१. प्रसिद्ध ढुंढिराज गली में २. सटे हुए रानी भवानी के मन्दिर में (मकान नं० सी० के० ३५/२८) पंचमुखी ३. समीप में मकान नं० सी०के० ३७/१८ में पंचमुखी ।
तत्वेश—धर्मकूप के समीप मकान नं० डी० ३/९७ में
तक्षक कुंड—वासुकिकुण्ड के पश्चिम लुप्त ।
तक्षकेश्वर—पियरी महल्ले में तकिया औघड़नाथ के समीप ।
ताम्रवाराह—ब्रह्मनाल पर नीलकंठ के समीप मकान नं०सीके० ३३/५७ में ।
तारकतीर्थ—मणिकर्णिका पर तारकेश्वर के सामने गंगाजी में ।
तारकेश्वर—ज्ञानवापी के पूर्व गौरीशंकर मन्दिर के नीचे ।
तारकेश्वर द्वितीय—तारक तीर्थ के ऊपर मणिकर्णिका घाटपर
तारकेश्वर तृतीय—केदारघाट पर बुर्जी के नीचे । शिवगण द्वारा स्थापित ।
तार्क्ष्यकेशव—आदिकेशव में ।
तार्क्ष्य तीर्थ—आदिकेशव के सामने ।
तिलपर्णेश्वर—दुर्गाजी के घेरे में । इनके मंदिर के द्वार पर वलि चढ़ती है । मकान नं० वी २७/२ ।
तुंगेश्वर—धन्वंतरीश्वर नाम से वृद्धकाल के घेरे में : मकान नम्बर के० ५२/३९ ।
दत्तात्रेयेश्वर—वर्तमान स्थान मकान नं० सीके० ३४/३६ दत्तात्रेयेश्वर मठ में ।
दत्तात्रेयेश्वर द्वितीय—मणिकर्णिका घाटपर ।
दत्तात्रेयेश्वर तीर्थ—राजघाट के किले के दक्षिण मध्य भाग में गंगाजी में ।
दशहरेश्वर—दशाश्वमेध घाट पर शीतला जी के मंदिर में ।
दशाश्वमेध तीर्थ—दशाश्वमेध घाट पर गंगाजी में ।
दशाश्वमेधेश्वर—दशाश्वमेध घाट पर शीतला जी के मंदिर में ।
दक्षेश्वर—वृद्धकाल के मंदिर में [मकान नं० के० ५२/३९] ।
दण्डखात तीर्थ—पियाला शहीद का कुंड—लुप्त ।

दंडपाणि—१ ढुंढिराज गली में मकान नं० सीके० ३६/१० में गली के कोने पर। २. काल भैरव मंदिर के पीछे मकान नं० के० ३२/२६ में क्षेत्रपाल नाम से। ३. शिवलिंग रूप से विश्वनाथजी के घेरे में वैकुंठेश्वर के पश्चिम के मंदिर में।

दंतहस्त विनायक—बड़े गणेश मंदिर के पास बाहर कुंए के समीप।

दंडीश्वर—देहली विनायक के पूर्व पंचक्रोशी मार्ग पर।

दंडीश्वर द्वितीय—दंडखान तीर्थ के दक्षिण लुप्त।

दाल्भ्येश्वर—मानमंदिर घाट के ऊपर। मकान नं० डी० १६/२८।

दाक्षायिणीश्वर—सतीश्वर नाम से प्रसिद्ध। मकान नं० के ४६/३२।

दिलीपेश्वर—देवनाथपुरा में मकान नं० में। समीप का दिलीप तीर्थ लुप्त।

दिवोदासेश्वर—विश्वभुजा गौरी के मन्दिर में मकान नं० डी० २/१३।

दीप्ताशक्ति—सूर्यकुंड पर साम्वादित्य के समीप।

दुर्गविनायक—दुर्गा जी के घेरे में टीले के पूर्व। मकान नं० वी २७/२।

दुर्गा—दुर्गाकुंड पर प्रसिद्ध। वहीं दुर्गाकुंड प्रसिद्ध। मकान नं० बी २७/२।

दुर्मुख विनायक—नेपाली खपड़े की गली पर मकान नं० सीके० ३४/६० में

देवदेव—ढुंढिराज गली में। सन्यासी कालेज में। मकान नं० सीके० ३७/१२।

देवयानीश्वर—नकुलीश्वर नाम से प्रसिद्ध। विश्वनाथ जी के समीप अक्षयवट की जड़ में मकान नं० सीके० ३५/२०।

देहली विनायक—पंचक्रोशी मार्ग पर। प्रसिद्ध।

द्रौपदादित्य—विश्वनाथ जी के समीप अक्षयवट के पास। मकान नं० सीके० ३५/२०।

द्रौपदी—द्रौपदादित्य के निकट। मकान नं० सीके० ३५/२०।

द्वारविनायक—पाँचोपाँडव मंदिर में। मकान नं० सीके० २८/१०।

द्वारेश्वर—वर्तमान काल में दुर्गाजी के मंदिर में दुर्गविनायक के दक्षिण के मंदिर में। प्राचीन स्थान कमाक्षा पर।

द्वारेश्वरी—द्वारेश्वर मंदिर में भग्न।

द्विमुखविनायक—सूर्यकुंड पर साम्वादित्य के पास।

धरणिवाराह—देखिए क्षोणीवाराह।

धरणि वाराह तीर्थ—देखिये क्षोणीवाराह तीर्थ।

धर्मकूप—मीरघाट के ऊपर थोड़ी दूर पर धर्मेश्वर के घेरे में। मकान नं० डी० २/१० के पूर्व।

धर्मपीठ—धर्मेश्वर के चारों ओर का क्षेत्र जिसकी सीमापर पूर्व में वैराग्येश, पश्चिम में धरिणीश, उत्तर में ऐश्वर्येश, दक्षिण में तत्वेश तथा ईशान कोण में ज्ञानेश्वर हैं। ये धर्मेश्वर के पंचवक्त्र कहे जाते हैं।

धर्मेश्वर—धर्मकूप महल्ले में मकान नं० डी० २/२१ में।

धर्मेश्वर द्वितीय—कामेश्वर के दक्षिण क्षेत्र में लुप्त।

धर्मेश्वर तृतीय—भद्रेश्वर के नैऋत्य अथवा दक्षिण क्षेत्र में लुप्त। यह भी सम्भव है कि द्वितीय तथा तृतीय धर्मेश्वर एक ही हों।

धर्मेश्वर कुंड—द्वितीय धर्मेश्वर के समीप लुप्त।

धौतपापेश्वर—पंचगंगा घाट पर पुश्ते के नीचे।

ध्रुवकुंड—ध्रुवेश्वर के समीप। लुप्त।

ध्रुवेश्वर—सनातनधर्म कालेज के समीप ध्रुवेश्वर महल्ले में।

नकुलीश्वर—विश्वनाथ जी के मन्दिर के पश्चिम अक्षयवट में देवयानीश्वर का पूजन नकुलीश्वर नाम से होता है। मकान नं० सी० के० ३५/२०।

नरनारायणकेशव—महथा घाट पर वदरीनाथ नाम से प्रसिद्ध।

नरनारायण तीर्थ—राजघाट के किले के मध्य भाग के समीप गंगाजी में।

नर्मदा तीर्थ—चौंसट्टी घाट के उत्तर गंगाजी में।

नर्मदेश्वर प्रथम—नर्मदा तीर्थ के ऊपर लुप्त।

नर्मदेश्वर द्वितीय—त्रिलोचन मंदिर के पीछे।

नलकूवर कूप—कामेश्वर के समीप लुप्त।

नलकूवरेश्वर—प्राचीन नाम पंचालकेश्वर जो कामेश्वर के पूर्व में थे लुप्त। इनकी पुनः स्थापना घासीटोले में मकान नं० के० ३०/६ में हुई। वहाँ वर्तमान।

नलकूबरेश्वर द्वितीय—मणिकर्णीश्वर के समीप। पितामहेश्वर के गह्वर में। मकान नं० सीके० ७/९२।

नक्षत्रेश्वर—आदिकेशव के निकट।

नागेश्वर तीर्थ—गायघाट पर गंगाजी में। वहीं नागेश्वर जिनकी पुनः स्थापना घोसला घाट पर मकान नं० सीके० १/२१ से सटे मन्दिर में हुई।

नागेशविनायक—१–घोसला घाट के समीप नागेश्वर मंदिर में [मकान नं० सीके० १/२० के पास] तथा २–गायघाट पर।

नाभितीर्थ—देखिये ब्रह्मनाल।

नारद केशव—प्रह्लाद घाट पर।

नारदतीर्थ—आदिकेशव से कुछ पश्चिम गंगाजी में।

नारदेश्वर—भद्रेश्वर क्षेत्र में लुप्त । वर्तमान नारद घाट के ऊपर मकान नं० डी० २५/१२ में ।

नारदेश्वर कुंड—भद्रेश्वर क्षेत्र में लुप्त ।

नारसिंही देवी— पुलस्त्येश्वर के दक्षिण निर्वाण नरसिंह के मंदिर में ।

नारायणी देवी—गोपीगोविंद के पश्चिम । संभवतः शीतला नाम से मकान नं० के० २०/१९ में ।

निकुंभेश्वर—विश्वनाथ जी के घेरे में पार्वती देवी के मंदिर में कोने में गड़हे में ।

निगड़भंजनी देवी—देखिये 'वन्दी देवी' ।

निर्वाण केशव—भदैनी में लोलार्क के समीप ।

निर्वाण नरसिंह—पुलस्त्येश्वर के दक्षिण ।

निवासेश्वर—भूतभैरव पर ।

निष्कलंकेश्वर—ढुंढिराज गली में मकान नं० सीके० ३५/३४ में ।

निष्पापेश्वर—केदारघाट पर बुर्जी के पास ।

नीलकंठ—प्रथम स्थान केदार के दक्षिण मकान नं० बी० ६/९९ में । द्वितीय स्थान ब्रह्मनाल के समीप मकान नं० सीके० ३३/२३ में ।

नीलकंठ द्वितीय—कृमिकुंड के उत्तर सड़क पर मकान नं० बी० १०/३२ में ।

नीलग्रीव तीर्थ—राजघाट से थोड़ा पूरब गंगाजी में ।

नैऋतेश्वर—पुष्पदन्तेश्वर के समीप ।

नन्दिकेश्वर—ज्ञानवापी के उत्तर लुप्त ।

पद्म तीर्थ—आदि केशव के सामने गंगा में ।

परद्रव्येश्वर—ढुंढिराज गली में मकान नं० सीके० ३५/३४ में ।

पर्वत तीर्थ—वीरेश्वर घाट के सामने गंगाजी में ।

पर्वतेश्वर—वीरेश्वर घाट की सीढ़ियों पर मकान नं० सीके० ७/१५० में ।

परशुराम तीर्थ—नन्दन साहु के महल्ले में परशुरामेश्वर के समीप लुप्त ।

परान्नेश—ढुंढिराज गली में मकान नं० सीके० ३५/३४ में ।

पराशरेश्वर—कर्णघंटा तालाव के दक्षिण व्यासेश्वर के समीप । मंदिर अब जलमग्न है ।

पवनेश्वर—भूतभैरव पर मकान नं० के० ६३/१४ में : भूलेटन गड़हा वायुकुंड ।

पशुपतीश्वर—पशुपतेश्वर महल्ले में मकान नं० सीके० १३/६६में । प्रसिद्ध ।

पंच चूड़ासरोवर—कर्णघंटा तालाब के उत्तर सप्तसागर महल्ले में अब लुप्त।
पंचनद तीर्थ—पंचगंगाघाट का दक्षिण का भाग जिसको कोनियाघाट कहते हैं। वहीं पर मढ़ी में शेषशायी की मूर्ति तथा पंचगंगा घाट के प्रथम निर्माण का शिलालेख।
पंचनदेश्वर—तैलंग मठ के समीप विन्दु माधव के रास्ते पर मकान नं० के० २२/११ में पंचगंगेश्वर नाम से प्रसिद्ध।
पंचमुद्रपीठ—पहले स्वर्लीनेश्वर के उत्तर। अब संकठा जी के मंदिर तथा आसपास का क्षेत्र।
पंचास्य विनायक—पिशाचमोचन पर मकान नं० सी० २१/४०।
पंचाक्षेश्वर—त्रिलोचन के समीप रुद्राक्षेश्वर नाम से प्रसिद्ध।

पादोदक कूप—पिलपिलाका कुंआ नाम से प्रसिद्ध। त्रिलोचन की गली से पूर्व मकान नं० ए० ३/८७-ए में।
पादोदक तीर्थ—वरणा संगम। आदि केशव के सामने गंगा जी में।
पापभक्षण—कालभैरव के दक्षिण गली में मकान नं० के० ३२/३६ में।
पार्वतीगौरी—आदिमहादेव के मंदिर में। त्रिलोचन के पिछवाड़े।
पार्वतीश्वर—आदिमहादेव के मंदिर में।
पाराशर्येश्वर—लोलार्क के समीप मकान नं बी० २/२१ में।
पाशपाणिविनायक—सदरबजार में प्रसिद्ध।
पाशुपततीर्थ—मणिकर्णिका के दक्षिण गंगाजी में।
पांडवेश्वर—ज्ञानवापी के उत्तर फाटक के पास मकान नं० सीके० २८/१० में।

पिचिंडिलविनायक—प्रह्लादघाट पर प्रह्लादेश्वर के मंदिर के बाहर वटवृक्ष के नीचे। मकान नं० ए० १०/८० में फाटक के भीतर।
पितामहतीर्थ—देखिये ब्रह्मनाल।
पितामहेश्वर—कश्मीरीमल की हवेली के पास सीतलागली में मकान नं० सीके० ७/९२ में फाटक के भीतर।
पितामहेश्वर द्वितीय—ज्येष्ठेश्वर में लुप्त।
पितामहेश्वर तृतीय—धर्मेश्वर के समीप लुप्त।
पितृकुण्ड—पितरकुण्डा नाम से प्रसिद्ध। पिशाचमोचन के दक्षिण तथा सूर्य कुण्ड के उत्तर।

पित्रीश्वर—पितृकुण्ड पर। मकान नं० सी० १८/४७।
पिप्पलादतीर्थ—मंगलागौरीघाट के दक्षिण गंगा में।

पिप्पलादेश्वर—विंदुमाधव के वर्तमान मंदिर के पास वृक्ष के नीचे। लुप्त।
पिलप्पिलातीर्थ—त्रिलोचन घाट पर गंगाजी में।
पिशाचमोचनतीर्थ—प्रसिद्ध। पितृकुण्ड के उत्तर।
पिशाचेश्वर—पिशाचमोचन तालाब के पास। मकान नं० सी० २१/४०।
पिशंगिलातीर्थ—त्रिलोचनघाट के पूर्वोत्तर का मिला हुआ घाट।
पिंगलेश्वर—पिशाचमोचन पर। मकान नं० सी० २१/३९ में नकुलेश्वर नाम से प्रसिद्ध।
पुलस्त्येश्वर—(१) अगस्त्येश्वर के दक्षिण (२) स्वर्गद्वारी पर मकान नं० सीके० ३३/४३ में।
पुलहेश्वर—पुलस्त्येश्वर के सामने मकान नं० सीके० १०/१६ के चौतरे पर।
पुष्पदंतेश्वर—देवनाथपुरा में मकान नं० डी० ३२/१०२ में।
पृथुतीर्थ—सोनातलाव नाम से प्रसिद्ध खजुरी गाँव में।
पृथ्वीश्वर—वहीं पिसनहरिया पर।
प्रचंड नरसिंह—दुर्गाजी के मंदिर में। लुप्त। अस्सी संगम पर जगन्नाथ जी में नृसिंह मूर्ति का पूजन होता है।
प्रणवतीर्थ—त्रिलोचन घाट से उत्तर गंगाजी में।
प्रणवविनायक—त्रिलोचन घाट पर ऊपर हिरण्यगर्भेश्वर के मंदिर में।
प्रतिग्रहेश्वर—ढुंढिराज गली में मकान नं० सीके० ३५/३४ में।
प्रपितामहेश्वर—पितामहेश्वर के मंदिर में कश्मीरीमल की हवेली के पास सीतलागली में। मकान नं० सीके ७/९२ में फाटक के भीतर।
प्रभासतीर्थ—सोमेश्वरघाट पर पाण्डे घाट के समीप। अब सोमेश्वर के सम्मुख गंगाजी में मानमंदिर घाट पर।
प्रमोदविनायक—नैपाली खपड़े में मकान नं० सीके० ३१/१६ में।
प्रयागतीर्थ—दशाश्वमेधघाट के उत्तर प्रयागघाट। इसी स्थान पर प्रयागेश्वर तथा शूलटंकेश्वर के मंदिर हैं। और पूर्ववाहिनी यमुना का सोता गंगा जी में गिरता है।
प्रयागमाधव—दशाश्वमेधघाट पर ऊपर मकान नं० डी० १७/१११ में
प्रयागलिंग—आदिकेशव पर चतुर्मुखलिंग आदिम स्थान (२) दशाश्वमेध घाट पर शूलटंकेश्वर के समीप चतुर्मुखलिंग जिसको लोग ब्रह्मेश्वर कहते हैं, तथा ३. मठियाघाट तथा ककरहाघाट के बीच में भी पुनःस्थापित।
प्रयागस्रोत—प्रयागघाट पर पूर्ववाहिनी यमुना का सोता जो पृथ्वी के नीचे से वहता हुआ गंगाजी में गिरता है।

प्रह्लादकेशव—प्रह्लादघाट पर। मकान नं० ए० १०/८०।
प्रह्लादतीर्थ—राजघाट के किले के मध्य भाग के सामने गंगाजी में।
प्रह्लादेश्वर—प्रह्लादघाट पर। मकान नं० ए० १०/८०।
प्रीतिकेश्वर—साक्षीविनायक के पिछवाड़े मकान नं० डी० १०/८ में।
बलिवामन—आदिकेशव के पास उत्तर के घेरे में।
बंदीतीर्थ—दशाश्वमेधघाट पर। लुप्त।
बंदीदेवी—दशाश्वमेधघाट पर मकान नं० डी० १७/१०० में।
बाणतीर्थ—प्रह्लादघाट के समीप गंगाजी में।
बाणेश्वर—स्वर्लीनेश्वर के ईशान कोण में। लुप्त।
बालचंद्रकूप—प्राचीन नाम तालकर्ण कूप। औसानगंज के महल में। मकान नं० के० ५६/११४।
बालचंद्रेश्वर—प्राचीन नाम तालकर्णेश्वर। औसानगंज के महल में। मकान नं० के० ५६/११४।
बिंदुतीर्थ—लक्ष्मणबालाघाट के सामने गंगाजी में।
बिंदुमाधव—इनके तीन मंदिर वर्तमान हैं। (१) विन्दुमाधव घाट के ऊपर पंचगंगापर मकान नं० के० २२/३३ में (२) लालघाट के समीप बुचई टोला में। (३) भाटकी गली में मकान नं० के० ३३/१८ में।
बिंदुविनायक—बिंदुमाधव मंदिर में पंचगंगाघाट पर मकान नं० के० २२/३३ में।
बुधेश्वर—आत्मावीरेश्वर के घेरे में मकान नं० सीके० ७/१५८ में दालान में अङ्गारेश्वर के उत्तर।
बृहस्पतीश्वर—आत्मावीरेश्वर के द्वार के सामने मकान नं० सीके० ७/१३३ में प्रसिद्ध।
ब्रह्मतीर्थ—बालमुकुन्द के चौहट्टे के ब्रह्मेश्वर के समीप। लुप्त।
ब्रह्मावर्तकूप—ढुंढिराजगली में अपारनाथ मठ में। मकान नं० सीके० ३७/१२।
ब्रह्मेश्वर—इनके तीन मंदिर हैं। (१) बालमुकुन्द के चौहट्टे में मकान नं० डी० ३३/६६-६७ में (२) ब्रह्माघाट पर मकान नं० के० २२/८२ में, तथा (३) वहीं मकान नं० के० २२/८९ में। ब्रह्माघाट की सीढ़ियों के पूर्व दालान में ब्रह्माजी की तेरहवीं शताब्दी की मूर्ति जिसके कारण इस घाट का नाम पड़ा।

ब्राह्मीदेवी—बालमुकुन्द के चौहट्टे में ब्रह्मेश्वर के मंदिर में। मकान नं० डी० ३३/६६-६७।

ब्राह्मीश्वर—शकरकन्दगली में मकान नं० डी० ७/६ में।

भगीरथलिंग—मणिकर्णिका के दक्षिण में बा० विश्वनाथ सिंह के लकड़ी के अड़ार में। मकान नं० सीके० १०/४६ के सामने।

भगीरथ विनायक—करुणेश्वर के समीप लाहौरीटोले में।

भद्रकर्णह्लद—पंचक्रोशी मार्ग पर रामेश्वर के निकट भुइली गाँव में।

भद्रकर्णेश्वर—पंचक्रोशी मार्ग पर रामेश्वर के निकट भुइली गाँव में वहीं पर।

भद्रकाली—(१) मध्यमेश्वर मन्दिर में (२) उसीके उत्तर मकान नं० के० ५३/१०७ में।

भद्रह्लद (भद्रदोह)—प्राचीनह्लद भदऊँ महल्ले में था वहाँ लुप्त। वर्तमान भोंसलाघाट पर नागेश्वर के नीचे घाट पर पक्का कुंड जो बालू में ढका रहता है।

भद्रेश्वर—प्राचीन स्थान भदऊं में। वहाँ अब मस्जिद है। वर्तमान स्थान अग्नीश्वर घाट के ऊपर गली में मकान नं० सीके० २/४ में उपशान्तेश्वर मन्दिर में।

भवतीर्थ—ब्रह्मनाल के उत्तर गंगाजी में। ऊपर ताम्रवाराह की मूर्ति।

भवानी गौरी—वाराणसी की प्रधान देवी जो प्राचीन काल की अन्नपूर्णा हैं। अन्नपूर्णाजी के बगल के राममन्दिर में जगन्नाथजी तथा कालीजी के बीच में। प्राचीन काल में यहाँ पर एक कुंड भी था जो भवानी तीर्थ कहलाता था।

भवानी तीर्थ—इस समय भवानीतीर्थ अन्नपूर्णा जी के पास के राम मन्दिर में कालीजी के सामने की दालान में फर्श के नीचे पक्के कुंड के रूप में दबा पड़ा है।

भवानीश्वर—भवानी गौरी के पास चबूतरे पर राममन्दिर में कालीजी तथा भवानी गौरी के बीच में।

भवेश्वर—भीमचंडी के पास।

भागीरथी तीर्थ—ललिताघाट के सामने गंगाजी में।

भागीरथी देवी—ललिताघाट पर मकान नं० डी० १/६७ में।

भागीरथीश्वर—स्वर्गद्वारी पर पं० मुक्तानन्द चतुर्वेदी के मकान में। मकान नं० सीके० ११/११।

भार्गव तीर्थ—राजघाट के किले के मध्य भाग के सामने गंगाजी में।
भारभूतेश्वर—राजादरवाजे पर मकान नं० सीके० ५४/४४ के पूर्व में।
भीमकुंड—भीमचंडी पर पंचक्रोशी के मार्ग में।
भीमचंड विनायक—वहीं भीमचंडी मंदिर में।
भीमचंडी देवी—पंचक्रोशी मार्ग पर। प्रसिद्ध।
भीमेश्वर—नैपालीखपड़े महल्ले में काशीकरवट में। मकान नं० सीके० ३१/१२ में।
भीषण भैरव—भूतभैरव नाम से प्रसिद्ध। भूतभैरव महल्ले में मकान नं० के० ६३/२८।
भीष्मकेशव—वृद्धकाल मन्दिर में वृद्धकाल की दालान में। मकान नं० के० ५२/३९।
भीष्मचंडी—शैलपुत्री दुर्गा के दक्षिण—लुप्त। सदरबजार की चंडी देवी पन्द्रहवीं शताब्दी में भीष्मचंडी कही जाती थीं जो उनकी पुनः स्थापना है।
भीष्मेश्वर—भीष्मचंडी के समीप। लुप्त।
भीष्मेश्वर द्वितीय—त्रिलोचन घाट पर। नीचे की मढ़ी में छोटा शिवलिंग।
भूतधात्रीश—भूतेश्वर नामसे प्रसिद्ध। दशाश्वमेध के समीप ऊपर गली में मकान नं० डी० १७/५० में। इनकी पुनःस्थापना सुखलाल साह के फाटक के भीतर मकान न० सीके० १३/१५ में भी हुई। दोनों स्थानों पर पूजन होता है।
भृगुकेशव—वर्तमान स्थान गोलाघाट पर त्रिलोचन के ईशान कोण में।
भृङ्गीशेश्वर—इनका ही नाम तुंगेश्वर तथा धन्वंतरीश्वर। वर्तमान स्थान वृद्धकाल के घेरे में धन्वंतरीश्वर नाम से। मकान नं० के० ५२/३९।
भैरव कूप—काल भैरव के उत्तर भैरववावली नामक महल्ले में। लुप्त। मकान नं० के० ४०/२०।
भैरव तीर्थ—ब्रह्माघाट के सामने गंगाजी में।
भैरवेश्वर—कालभैरव के पश्चिम गली के कोने पर मकान नं० के० ३२/७ में।
मखतीर्थ—पंचगंगा घाट के पास लक्ष्मणवाला घाट के सामने गंगाजी में।
मखेश्वर—वहीं। लुप्त।
मणिकर्णिका तीर्थ—यह वहुत वड़ा तीर्थ है सेंधिया घाट से गंगामहलघाट तक जो चौसट्टी घाट के दक्षिण में है। वर्तमान काल में मणिकर्णिकाघाट

का ही प्राधान्य है जहाँ चक्रपुष्करिणी, मणिकर्णिकेश्वर, मणिकर्णी देवी इत्यादि हैं।

मणिकर्णिकेश्वर—मणिकर्णीश्वर भी इन्हीं का नाम है। घाट से ऊपर चढ़ कर मकान नं० सीके० ८/१२ में। दर्शन ऊपर से गोमठ के समीप से भी होता है।

मणिकर्णी विनायक—मणिकर्णिका घाट पर मकान नं० सीके० १०/४८ के सामने।

मणिप्रदीप कुंड—वृद्धकाल के पूर्व दुल्ली गड़ही नाम से प्रसिद्ध।

मणिप्रदीप नाग—समीप में ही मंदिर। लुप्त।

मत्स्योदरी तीर्थ—मछोदरी का पोखरा। प्रसिद्ध।

मदालसेश्वर—नेपाली खपड़े की गली पर। कालिका गली के मोड़ के पास। मकान नं० डी० ५/१३३।

मध्यमेश्वर—मैदागिन के उत्तर। मकान नं० के० ५३/६३ के सामने मध्यमेश्वर महल्ले में।

मन:प्रकामेश्वर—साक्षीविनायक के समीप। मकान नं० डी० १०/५०।

मयूखादित्य—मंगलागौरी के मंदिर में। मकान नं० के २४/३४ में।

मयूखार्क तीर्थ—लक्ष्मणवाला घाट के सामने गंगाजीमें। वहीं पर कुंड है जिससे किरणा नदी का उद्भव माना जाता है।

मरीचिकुंड—नाग कुंआ के उत्तर लुप्त।

मरुकेश्वर—देखिये नैॠतेश्वर।

मरुत्त तीर्थ—रामघाट तथा अग्नीश्वर घाट के बीच में गंगाजी में।

महाकालेश्वर—(१) वृद्धकाल के घेरे में वृद्धकाल के मंदिर से पश्चिम में। (२) कालभैरव के पूर्व मकान नं० के० ३२/२४ में पुन: स्थापना। वृद्धकाल के पूर्व महाकालकुंड लुप्त। पहले वहीं महाकाल थे। एक महाकालेश्वर ओंकारेश्वर के पास भी थे वे भी लुप्त हैं।

महाकालेश्वर द्वितीय—महाकाल गण द्वारा स्थापित। पुराना स्थान ज्ञानवापी के आग्नेयकोण के पीपल के पास। पुन:स्थापना विश्वनाथ जी के घेरे में वैकुंठेश्वर के पश्चिम के मंदिर में बड़ा शिवलिंग।

महादेव—आदि महादेव नाम से प्रसिद्ध। त्रिलोचन के पूर्वोत्तर।

महादेव कूप—महादेव के प्राचीन स्थान के समीप राजघाट किले के पश्चिम लुप्त। इसको सारस्वत कूप भी कहते थे।

महानादेश्वर—आदि महादेव के मन्दिर में।

महापाशुपतेश्वर—नैपाल पशुपति नाम से प्रसिद्ध। ललिताघाट पर मकान नं० डी० १/६७ में।

महाबल नृसिंह—कामेश्वर महादेव के घेरे में पुनः स्थापित। प्राचीन स्थान ओंकारेश्वर के पूर्व। लुप्त।

महाभयहर नृसिंह—पितामहेश्वर के पश्चिम। शीतलागली में कश्मीरी मल की हवेली के समीप। मकान नं० सीके० ७/९२ में।

महामुंडाचंडी—वर्तमान काल में बागीश्वरी देवी को महामुंडा चंडी कहा जाता है। मकान नं० जे० ६/३३।

महामुंडेश्वर—वहीं। प्राचीन स्थान ऋणमोचन तीर्थ के समीप जहाँ अब लुप्त।

महाराज विनायक—बड़े गणेश नाम से प्रसिद्ध। मकान नं० के० ५८/१०१।

महारुंडा—लोलार्क के उत्तर मकान नं० बी० २/१७ के समीप से हटाकर अब दुर्गाजी में कालीजी नाम से वर्तमान।

महालक्ष्मी—प्राचीन स्थान आदि केशव के पास। वर्तमाम केदारेश्वर के दक्षिण मकान नं० बी० ६/९९।

महालक्ष्मी द्वितीय—लक्ष्मीकुंड पर प्रसिद्ध। मकान नं० डी० ५२/४०।

महालक्ष्मी तृतीय—कृत्यकल्पतरु में श्रीदेवी नाम। ओंकारेश्वर के समीप। लुप्त। लक्ष्मीकुंड पर मकान नं० डी० ५२/३८ में आदिलक्ष्मी नाम से प्रतिष्ठित।

महालक्ष्मी कुंड—लक्ष्मीकुंड नाम से प्रसिद्ध।

महालक्ष्मी तीर्थ—आदिकेशव के समीप गंगाजी में।

महालक्ष्मीश्वर—लक्ष्मीकुंड पर। मकान नं० डी० ५२/३८।

महाश्मशान स्तंभ—लाट भैरव पर दो स्तंभ थे। एक महाश्मशानस्तंभ, दूसरा कुलस्तम्भ। महाश्मशानस्तम्भ लुप्त। उसका शीर्षक कालभैरव के समीप मकान नं० के० ३२/६ में रखा है और उसका प्रतीक दंडपाणि भैरव नाम से मकान नं० के० ३१/४९ में है।

महासिद्धकुंड—इसके सम्बन्ध में विवाद है। कुछ लोग भदैनी की भद्रवनी पोखरी को सिद्धकुन्ड कहते हैं और कुछ लोग कृमिकुंड को।

महासिद्धीश्वर—कुरुक्षेत्र के समीप मकान नं० बी० २/२८२ में अथवा कृमिकुंड पर कीनाराम बाबा के स्थान में। वहाँ लुप्त।

महिषासुरतीर्थ—प्रह्लाद घाट के कुछ उत्तर का तीर्थ गंगाजी में।

महेश्वर (शूलटंक)—प्रथम स्थान ज्ञानवापी के नैऋत्यकोण के पीपल के पास। वर्तमान शूलटंकेश्वर नाम से दशाश्वमेध पर और महेश्वर नाम से मणिकर्णिका घाट पर।

महोत्कटेश्वर—कामेश्वर महादेव के घेरे में।

मंगलतीर्थ—लक्ष्मणबालाघाट के सामने गंगाजी में।

मंगलविनायक—मंगलागौरी के मंदिर में। मकान नं० के० २४/३४।

मंगलागौरी—मकान नं० के० २४/३४ में प्रसिद्ध।

मंगलोदकूप—मकान नं० के० २३/८९ में।

मंडविनायक—लक्ष्मीकुंड के उत्तर पास में।

मंदाकिनीतीर्थ—मैदागिन का पोखरा। प्रसिद्ध।

मातृतीर्थ—दशाश्वमेधघाट पर कुण्ड अब लुप्त।

मातरः—दशाश्वमेध की शीतला के मंदिर की देवियाँ।

मातलीश्वर—काशीखंड में। इनका नाम मालतीश्वर है। वृद्धकाल के घेरे में। मकान नं० के ५२/३९।

मानसरोवरतीर्थ—मानसरोवर तालाव। प्रसिद्ध परंतु अब लुप्त।

मार्कण्डेयतीर्थ—इस नाम के दो तीर्थ हैं। (१) पचगङ्गाघाट पर गंगाजी में (२) ललिता घाट के दक्षिण तथा चौसट्टी घाट के उत्तर किसी स्थान पर गङ्गाजी में।

मार्कण्डेयेश्वर—इनके तीन स्थानों का वर्णन है जिसमें से दो लुप्त हैं। वर्तमान एक स्थान ढुंढिराज गली में दंडपाणि मंदिर के बगल में। मकान नं० सीके० ३६/१० में।

मालतीश्वर—देखिये मातलीश्वर।

माहेश्वरीदेवी—विश्वनाथजी की कचेहरी के गलियारे में उत्तर की दीवाल में।

मांधातृतीर्थ—ललिताघाट के समीप कुंड। लुप्त।

मांधात्रीश्वर—मोक्षद्वारेश्वर के समीप मकान नं० सीके० ३४/१४ में।

मित्रविनायक—आत्मावीरेश्वर के घेरे में। मकान नं० सीके० ७/१५८।

मुकुटकुंड—गोआवाई का कुण्ड नवाबगंज में ऐसा प्रसिद्ध मत है। दूसरा मत यह है कि यह कुण्ड कमच्छा के समीप कहीं पर है।

मुकुटेश्वर—गोआवाई के कुण्ड पर लुप्त। कुछ दिनों पहले तक वर्तमान थे। अथवा कामाक्षा पर।

मुक्तितीर्थ—मणिकर्णिका तथा ललिता घाट के बीच में मणिकर्णिका के समीप गंगा जी में।

मुखनिर्मालिकागौरी—गायघाट के ऊपर हनुमानजी के मंदिर में।
मुखप्रेक्षणीदेवी—मंगलागौरी मंदिर में मंगलागौरी से उत्तर पास में ही। मकान नं० के० २४/३४।
मुचकुन्देश्वर—गोदौलिया पर वड़ादेव नाम से। मकान नं० डी० ३७/४०।
मुण्डविनायक—सद्रबाजार में चण्डीश्वर के मंदिर में।
मृत्वीश—पुराना नाम अपमृत्युहरेश्वर। अब मृत्युञ्जय नाम से प्रसिद्ध। मकान नं० के० ५२/३९।
मैत्रावरुणतीर्थं—अग्नीश्वर घाट से उत्तर गंगाजी में।
मैत्रावरुणेश्वरौ—लुप्त उसी स्थान पर।
मोदकप्रियविनायक—आदिमहादेव में त्रिलोचन के समीप।
मोदविनायक—काशीकरवट में। मकान नं० सीके० ३१/१२।
मोक्षद्वार—मोक्षद्वारेश्वर के समीप का गंगाजी का मार्ग।
मोक्षद्वारेश्वर—ललिताघाट के समीप मकान नं० सीके० ३४/१० में।
यमतीर्थ—यमघाट प्रसिद्ध। संकठा घाट के समीप। गंगाजी में।
यमादित्य—संकठा घाट की सीढी पर। मकान नं० सीके० ७/१६४।
यमेश्वर—यमघाट पर गंगातट पर। संकठा घाट के पास।
यमुनेश्वर—त्रिलोचन के मन्दिर में।
यक्षविनायक—वावू रुद्रप्रसाद के मन्दिर में मकान नं० सीके० ३७/२९ में। यह समीप की ब्रह्मपुरी में कुएँ के पास हैं ऐसा भी दूसरा मत है।
यज्ञवाराहकेशव—स्वर्लीनेश्वर के समीप। मकान नं० ए० ११/२९ की दीवार में। पुनःस्थापना मीरघाट मकान नं० डी० ३/७९।
यज्ञवाराहतीर्थ—राजघाट के किले के सामने राजघाट के कुछ उत्तर पूर्व की ओर गंगाजी में।
यज्ञोदकूप—ओंकारेश्वर के टीले के ईशान कोण में वर्तमान। कुछ लोग इसको ही अधोरोदकूप कहते हैं।
याज्ञवल्क्येश्वर—वशिष्ठवामदेव मंदिर में सेन्धिया घाट के ऊपर। मकान नं० सीके० ७/१६१।
योगिनीतीर्थ—चौसट्टीघाट तथा राणामहलघाट के सामने गंगाजी में।
योगिनीपीठ—राणामहल में जहाँ योगिनियाँ स्थापित हैं।
रत्नेश्वर—वृद्धकाल की सड़क पर बीच में। मकान नं० के० ५३/४०।
राजपुत्रविनायक—राजघाट के किले के भीतर सड़क के दक्षिण में।

राजराजेश्वर—इनके इस समय तीन स्थान हैं। (१) आदिमस्थान रज़िया की मस्जिद के पीछे सड़कपर मकान नं० सीके० ३६/५७। (२) स्वर्गद्वारी पर मकान नं० सीके० १०/१६ के चबूतरे के नीचे, (३) ढुंढिराजगली में मकान नं० सीके० ३५/३३।

रामतीर्थ—रामघाट के सामने गङ्गाजी में।

रामेश्वर—इनके पांच स्थान हैं (१) वीर रामेश्वर—रामघाट पर, (२) राम कुण्ड पर (मकान नं० डी० ५५/११५), (३) हनुमानघाट पर हनुमान जी के घेरे में, (४) मानमंदिर घाट के ऊपर सोमेश्वर मंदिर के पास मकान नं० डी० १६/३४ के समीप, (५) पंचक्रोशी मार्ग पर। पहले और पाँचवें स्वतन्त्र हैं परन्तु दूसरे, तीसरे तथा चौथे एक ही देवता की भिन्न- भिन्न कालों की पुनःस्थापना का स्वरूप हैं जिनमें चौथे अपने प्राचीन स्थान के समीप हैं।

रुद्रावासकुन्ड—सुग्गी गड़ही का प्राचीन नाम। मच्छोदरी के उत्तर में।

रुद्रावासतीर्थ—मणिकर्णिका के दक्षिण गंगा जी में।

रुद्रावासेश्वर—मणिकर्णिकेश्वर के दक्षिण। चक्रपुष्करिणी से सटे हुए। वहुधा वालू के नीचे।

रुद्रेश्वर—त्रिपुरा भैरवी के मंदिर के पास मकान नं० डी० ५/२१ में

रुद्रेश्वर द्वितीय—सुग्गी गड़ही के तट पर। लुप्त।

रुद्रभैरव—हनुमानघाट पर। मकान नं० बी० ४/१६। देखिये कंकाल भैरव।

रेवंतेश्वर—विन्दुमाधव घाट की सीढ़ियों के ऊपर फाटक के पास छोटे शिवालय में।

(आचार्य) लकुलीश्वर—महादेव के आदिम स्थान के दक्षिण में। लुप्त। इनकी एक आधुनिक मूर्ति महापाशुपतेश्वर मन्दिर (नेपाल पशुपति मंदिर) के द्वार पर प्रतिष्ठित है। ललिताघाट मकान नं० डी० १/६७।

ललितागौरी—ललिताघाट पर प्रसिद्ध। मकान नं० डी० १/६७। इनका पहला स्थान विशालाक्षी के दक्षिण में था।

ललितातीर्थ—ललिता घाट पर गंगाकेशव के सम्मुख गंगाजी में।

लक्ष्मीतीर्थ—लक्ष्मीकुण्ड का नाम।

लक्ष्मीनृसिंह—राजमंदिर में। मकान नं० के० २०/१५६।

लक्ष्मीनृसिंहतीर्थ—राजघाट के किले के सामने गंगाजी में पश्चिम की ओर।

लांगलीश्वर—वर्तमान स्थान खोवावजार में मकान नं० सीके० २८/४ में।
लोलार्क—भदैनी महल्लेमें प्रसिद्ध।
लोमशेश—वृद्धकाल के घेरे में। मकान नं० के० ५२/३६।
वक्रतुण्डविनायक—सरस्वतीविनायक नाम से प्रसिद्ध। चौसट्टीघाट के समीप। मकान नं० डी० २०/४।
वरणानदी—प्रसिद्ध।
वरणासंगम—आदिकेशव के समीप गंगा तथा वरणा का संगमस्थल।
वरदविनायक—प्रह्लादघाट की सड़क पर। मकान नं० ए० १३/१६ के वाहर।
वराहेश्वर—वर्तमान स्थान दशाश्वमेध घाटपर मकान नं० डी० १७/१११ में।
वरुणेश्वर—ढुंढिराजगली में मकान नं० सीके० ३६/१० में।
वशिष्ठ ऋषि—सेंधिया घाट के ऊपर वशिष्ठवामदेव मंदिर में। मकान नं० सीके० ७/१६१।
वशिष्ठतीर्थ—दशाश्वमेध घाट के दक्षिण चौसट्टीघाट के पहले गंगाजी में।
वशिष्ठेश्वर—वर्तमान स्थान (१) ललिताघाट गंगादित्य के पास मकान नं० डी० १/६७ में। (२) सेंधिया घाट पर वशिष्ठवामदेव मकान नं० सीके० ७/१६१ में।
वशिष्ठेश्वर (द्वि०)—वरणासंगम के पूर्व उस पार।
वामदेव ऋषि—शिवलिंग रूप में वामदेवेश्वर का पूजन होता है। पहले इनकी ऋषि रूप की मूर्ति थी जो अब लुप्त है। मकान नं० सीके० ७/१६१।
वामदेवेश्वर—सेंधियाघाट पर ऊपर मकान नं० सीके० ७/१६१।
वामनकेशव—त्रिलोचन के समीप मधुसूदन नाम से प्रसिद्ध। मकान नं० ए० २/२६।
वामनतीर्थ—राजघाट के किले के दक्षिण गंगाजी में।
वाराणसीदेवी—वर्तमान स्थान त्रिलोचन मंदिर में।
वाराहीदेवी—मानमन्दिर घाट के उत्तर मकान नं० डी० १६/८४ मैं।
वाल्मीकीश्वर—त्रिलोचन मंदिर में।
वासुकि कुंड—वासुकीश्वर के समीप लुप्त।
वासुकीश्वर—वर्तमान स्थान (१) आत्मावीरेश्वर के समीप मकान नं० सीके० ७/१५५ में। (२) नारद घाट के ऊपर नारदेश्वर के सामने मकान नं० डी० २५/११ में।

विकटद्विज विनायक—धूपचंडी देवी के मंदिर में पीछे की ओर। मकान नं० जे० १२/१३४ में।

विकटा मातृका— (१) आत्मावीरेश्वर मंदिर में। कात्यायिनी दुर्गा (२) संकठा जी मकान नं० सी० के० ७/१५९ में। ये दोनो स्थान नवीन हैं। प्रथम स्थान स्वर्लीनेश्वर के उत्तर में था।

विघ्ननायक गणेश—विश्वनाथ के घेरे में पार्वती देवी के मंदिर में पश्चिम की दीवाल में। प्राचीन मूर्ति खंडित हो जाने पर नई संगमरमर की मूर्ति स्थापित हुई है।

विघ्नराज विनायक—चित्रकूट के तालाव पर। मकान नं० जे० १२/३२।

विघ्नेश्वर तीर्थ—वीरेश्वर तीर्थ तथा हरिश्चंद्र तीर्थ के बीच गंगा जी में। हरिश्चंद्रेश्वर के उत्तर संकठा घाट के सामने।

विटंक नरसिंह—केदारेश्वर के मंदिर में। मकान नं० बी० ६/१०२।

विदार नरसिंह—प्रह्लाद घाट पर। मकान नं० ए० १०/८२।

विदार नरसिंह तीर्थ—राजघाट के किले के मध्य भाग के सामने गंगाजी में।

विद्येश्वर—नीमवाली ब्रह्मपुरी में मकान नं० सीके० २/८१ में।

विधि तीर्थ—विधीश्वर के पास।

विधि देवी—विधीश्वर के समीप।

विधीश्वर—अगस्त्येश्वर के आग्नेय कोण में।

विमला दित्य—जंगमवाड़ी में खारीकुंआ के पास मकान नं० डी० ३५/२७३ में हरिकेशेश्वर के समीप।

विमलेश्वर—नया महादेव महल्ले में नीलकंठ नाम से प्रसिद्ध। मकान नं० ए० १०/४७।

विरूपाक्ष—विश्वनाथ के घेरे में शनैश्चरेश्वर पूर्व प्राचीन बड़ा शिवलिंग।

विरूपाक्षी गौरी—विश्वनाथ के घेरे में नैऋत्यकोण के छोटे मंदिर में।

विशाल तीर्थ—विशलाक्षी के पीछे गंगा जी में।

विशालाक्षी गौरी—मीरघाट महल्ले में मकान नं० डी० ३/८५ में।

विशालाक्षीश्वर—विशालाक्षी मंदिर में। मकान नं० डी० ३/८५।

विश्वकर्मेश्वर—स्ट्रीथफील्ड रोड पर ग्वाल गड़हे के पास मकान नं० ए० ३४/६१ में।

विश्वकर्मेश्वर द्वितीय—आत्मावीरेश्वर के समीप वृहस्पतीश्वर के मंदिर में सी० के ७/१३३ में।

विश्व तीर्थ—मणिकर्णिका घाट के दक्षिण गंगा जी में।
विश्वभुजा गौरी—धर्मकूप के समीप। मकान नं० डी० २/१३।
विश्वा गौरी—सिद्धविनायक के पिछवाड़े।
विश्वेदेवेश्वर—मध्यमेश्वर के दक्षिण के शिवालय में। मकान नं० के० ५३/६३ के सामने।
विश्वेश्वर—प्रथम स्थान रज़िया की मस्जिद में। मकान नं० सीके० ३८/५। तत्पश्चात् ज्ञानवापी मस्जिद के स्थान पर और वर्तमान मकान नं० सीके० ३५/१९ में प्रसिद्ध।
विश्वेश्वर द्वितीय—शुद्धनाम चित्रेश्वर जो लिपिप्रमाद से किसी समय विश्वेश्वर हो गया। देखिये कृत्यकल्पतरु तीर्थविवेचनकांड पृ० ७२। मकान नं० के० ५४/१३३ दारानगर में।
विष्णु—ज्ञानवापी के विश्वेश्वर मंदिर के मुक्तिमंडप में स्थित विष्णु भगवान की मूर्ति जो अब विश्वनाथ जी के मंदिर के नैऋत्यकोण में विरूपाक्षी मंदिर में रखी है।
विष्णु तीर्थ—मणिकर्णिका तथा ललिताघाट के बीच के पंद्रह तीर्थों में से बारहवाँ तीर्थ।
वीर तीर्थ—संकठा घाट के आस पास गंगा जी में।
वीरभद्रेश्वर—मध्यमेश्वर के दक्षिण के शिवालय में। मकान नं० के० ५३/६३ के सामने।
वीरभद्रेश्वर द्वितीय—ज्ञानवापी मस्जिद के वायव्यकोण में स्थान। अब लुप्त।
वीरमाधव—आत्मावीरेश्वर की बाहरी दीवाल में आले में छोटी सी मूर्ति। मकान नं० सीके० ७/१५८।
वीरेश्वर—आत्मावीरेश्वर नाम से प्रसिद्ध। मकान नं० सी० के० ७/१५८।
वृद्धकालेश्वर—वृद्धकाल महल्ले में मकान नं० के० ५२/३९ में प्रसिद्ध।
वृद्धादित्य—मीरघाट पर मकान नं० डी० ३/१६ में। समीप में ही गंगाजी में वृद्धार्क तीर्थ।
वृषमध्वज—कपिलधारा के समीप प्रसिद्ध।
वृषभेश्वर—वर्तमान स्थान गोरखनाथ के टीले पर। मकान नं० के० ५८/७८।
वृषरुद्र—हरतीरथ के पश्चिम तट पर वर्तमान मंदिर में मूर्ति रखी है। मकान नं० के० ४६/१४७।

वेदेश्वर—आदिकेशव परं।
वैकुंठमाधव—सेंधिया घाट के ऊपर। मकान नं० सी० के० ७/१६५।
वैतरणी दीर्घिका—सुग्गी गड़ही के समीप लुप्त। वर्तमान काल में लाटभैरव के पूर्व में थोड़ी दूर पर एक झील।
वैद्यनाथ—कोदई की चौकी के सामने। मकान नं० डी० ५०/२०।
वैद्येश्वर कुंड—लुप्त। प्रतीक रूप में वृद्धकाल के मंदिर में अमृत कुंड नाम से। मकान नं० के० ५२/३९।
वैराचनेश्वर—सीमाविनायक के पीछे गली में प्राचीन शिवलिंग। पुनः स्थापित।
व्याघ्रेश्वर—भूतभैरव महल्ले में। मकान नं० के० ६३/१६।
व्यासकूप—कर्णघंटा तालाव के पूर्वीय तट पर। मकान नं० के० ६०/६७ में।
व्यासेश्वर—वहीं पर तालाव के दक्षिण मंदिर में जो अब पानी में डूब गया है।
शक्रेश्वर—इन्द्रेश्वर नाम से प्रसिद्ध। मणिकर्णिका पर।
शतकालेश्वर—वर्तमानकाल में ठठेरीवजार में पीतल के शिवाले में गर्त में। मकान नं० सीके० १७/२४ के पास।
शनैश्चरेश्वर—विश्वनाथजी के घेरे में मंदिर के नैऋत्यकोण मे। पीतल की जलहरी में।
शशिभूषणलिंग—पापमोचनेश्वर नाम से पापमोचन पोखरे के समीप। ऋण-मोचन के पूर्व।
शंकुकर्णेश्वर—शंखूधारा महल्ले में। मकान नं० बी० २७/१२० के सामने।
शंख तीर्थ—आदि केशव के सामने गंगाजी में।
शंख माधव—वर्तमान राजमंदिर में।
शालकटंकट विनायक—मडुआडीह में तालाव के उत्तर प्रसिद्ध।
शांतन्वीश्वर—त्रिलोचनघाट पर नीचे की मढ़ी में वड़ा शिवलिंग। शांतेश्वर नाम से प्रसिद्ध।
शांतिकरी गौरी—वर्तमान मढियाघाट और ककरहाघाट के बीच वरणातट पर। पुनः स्थापित।
शिखिचंडी—लक्ष्मीकुण्ड पर महालक्ष्मी मंदिर में पूर्वाभिमुखी देवी। मकान नं० डी० ५२/४०।
शिवदूती—स्वर्लीनेश्वर के समीप।

शिवेश्वर—विश्वेश्वरगंज में। मकान नं० के० ४४/३३ में।

शुकेश—काशी गोशाला के पश्चिमी फाटक के बगल में कोठरी में। मकान नं० के० ४०/२०।

शुक्रकूप—कालिका गली में। मकान नं० डी० ८/३० के सामने।

शुक्रेश्वर—कालिका गली में। मकान नं० डी० ८/३०।

शुष्केश्वर—केदारेश्वर की अंतर्गृह यात्रा में शुक्रेश्वर नाम से पूजित। मकान नं० बी० १/१८५।

शृंगारगौरी—ज्ञानवापी के विश्वेश्वर मंदिर के शृंगार मंडप में। लुप्त। अब भोग अन्नपूर्णा नाम से विश्वनाथ मन्दिर में ईशान कोण में।

शेष माधव—वर्तमान स्थान राज मंदिर में।

शेष तीर्थ—राजघाट से कुछ दूर ईशानकोण में गंगाजी में।

शैलाद तीर्थ—इसका नाम नन्दितीर्थ भी है। मणिकर्णिका तथा ललिताघाट के बीच के पन्द्रह तीर्थों में से ग्यारहवाँ तीर्थ।

शैलेश्वर—मढियाघाट पर शैलपुत्री दुर्गा के मन्दिर में।

शैलेश्वरी—शैलपुत्री दुर्गा का नाम। मढ़ियाघाट पर।

श्रीकंठलिंग—अब लक्ष्मी कुण्ड पर।

श्रीमुखीगुहा—ओंकारेश्वर के टीले के नीचे। अब उसका द्वार वन्द हो गया है। लुप्त।

श्रुतीश्वर—रत्नेश्वर से मिले हुए उत्तर के मन्दिर में। मकान नं० के० ५३/४०।

श्वेतद्वीप तीर्थ—आदिकेशव का मन्दिर जिस स्थान पर है उसका नाम।

श्वेतेश्वर—पाँचों पांडवों के मन्दिर में मकान नं० सी० के० २८/१०।

षड़ानन—मणिकर्णिका पर तारकेश्वर के पूर्व। लुप्त।

षड़ानन द्वितीय—सतीश्वर मन्दिर में अब लुप्त। भग्न मूर्ति कालभैरव मन्दिर में रखी है।

षड़ानन तृतीय—वर्तमान आदिमहादेव के पश्चिम स्कंदेश्वर में। इनकी गुप्तकालीन मूर्ति भारत कला भवन में है।

सगरेश्वर—संकठा जी के मन्दिर में। मकान नं० सीके० ७/१५९।

सतीश्वर—इन्हीं का नाम दाक्षायिणीश्वर है। रत्नेश्वर के पूर्व मकान नं० के० ४६/३२।

सप्तसागर तीर्थ—लुप्त। इसी स्थान पर सप्तसागर महल्ला बसा है।
समुद्रेश्वर—बाँसफाटक से दक्षिण सड़क पर ही छोटे मन्दिर में। मकान नं० सीके० ३७/३२ के बाहर ही।
सरस्वती देवी—गोमठ में मकान नं० सीके० ८/२१। नीचे गंगाजी में सारस्वत तीर्थ।
सरस्वतीश्वर—त्रिलोचन मंदिर में।
संगमेश्वर—आदिकेशव के पूर्व वरणासंगम पर।
संनिहत्या तीर्थ—(१) कुरुक्षेत्र का तालाब। तथा (२) सोनहटिया गड़ही।
संवर्तेश्वर—पाँचोपाँडव मंदिर में। मकान नं० सीके० २८/१०।
संहारभैरव—वर्तमान स्थान पाटन दरवाजे के पास।
सारस्वतकूप—देखिये महादेव कूप।
सारस्वत तीर्थ—मणिकर्णिका के उत्तर (संभवतः गोमठ के सामने) गंगाजी में। गोमठ में सरस्वतीजी की मूर्ति।
सांबादित्य—सूर्यकुंड महल्ले में कुंड के तट पर मन्दिर।
सिद्धकूट—वागेश्वरी के चारों ओर का ऊँचा स्थान।
सिद्ध्यष्टकेश्वर—बड़े गणेश पर। मकान नं० के० ५८/१०३।
सिद्ध्यष्टककुंड—गणेश गड़ही नाम से प्रसिद्ध। इसको पाट कर हरिश्चन्द्र कालेज का भवन बना है।
सिद्धयोगेश्वरी—सिद्धेश्वरी महल्ले में सिद्धेश्वरी नाम से प्रसिद्ध। मकान नं० सीके० ७/१२४।
सिद्धलक्ष्मी देवी—मणिकर्णिका घाट पर सिद्धिविनायक के पिछवाड़े।
सिद्धिविनायक—मणिकर्णिका पर। अमेठी मन्दिर के पास। मकान नं० सीके० ६/१।
सिद्धिविनायक द्वितीय—लुप्त।
सिद्धीश्वर—पुष्पदंतेश्वर के दक्षिण में।
सिद्धेश्वर—सिद्धकूट पर। वर्तमान वागेश्वरी के दक्षिण। मकान नं० जे० ६/८४।
सिंहतुण्ड विनायक—बालमुकुन्द के चौहट्टा में ब्रह्मेश्वर मंदिर में। मकान नं० डी० ३३/६६-६७।
सीमाविनायक—हरिश्चन्द्रेश्वर के सामने संकठाजी की दीवार में।
सुमुखविनायक—नैपाली खपड़ा की गली में। मकान नं० सीके० ३५/८।

सुमुखेश्वर—त्रिलोचन पर।
सूक्ष्मेश्वर—धूपचंडी देवी के मन्दिर में पिछवाड़े। विकट द्विज विनायक के सामने। मकान नं० जे० १२/१३४।
सृष्टिविनायक—कालिकागली में मकान नं० डी० ८/३ की वाहर की दीवाल में।

सेनाविनायक—संकठाजी के मन्दिर की वाहर की दीवाल में हरिश्चन्द्रेश्वर के सामने सीमा विनायक के पास।
सोमेश्वर—वर्तमान दो स्थान (१) मानमन्दिर घाट पर मकान नं० डी० १६/३४ के पास प्रसिद्ध। (२) पाँडेघाट के ऊपर।
सोमेश्वर द्वितीय—ब्रह्माघाट महल्ले में।
सौभाग्य गौरी—वर्तमान आदिविश्वेश्वर मन्दिर में उत्तर की कोठरी में। मकान नं० सीके० ३८/८।
स्कन्द तीर्थ—मणिकर्णिका पर तारकेश्वर के पास गंगाजी में।
स्कन्देश्वर—आदिमहादेव के समीप।
स्थाणु—कुरुक्षेत्र तालाव के समीप में मकान नं० वी० २/२४७ में।
स्थूलजंघ विनायक—दोस्थान (१) रानी कुआँ पर छोटे मन्दिर में चित्रघंट विनायक के पास में मकान नं० सीके० २३/२५ के वाहर। (२) पशुपतीश्वर मन्दिर में। मकान नं० सीके० १३/६६।
स्थूलदंत विनायक—मानमन्दिर महल्ले में सोमेश्वर के द्वारपर। मकान नं० डी० १६/३४ के समीप।

स्वप्नेश्वर—(१) शिवालाघाट के समीप प्रसिद्ध (२) लोकार्क के उत्तर समीप मकान नं० वी० २/३३ में।
स्वप्नेश्वरी—वहीं स्वप्नेश्वर के पास।
स्वयंभुलिंग—रामकुंड के पास लकसा महल्ले में। मकान नं० डी० ५४/११४ के वाहर।
स्वर्गद्वार—स्वर्गद्वारी महल्ले में। वावू विश्वनार्थसिह के मकान नं० सीके० १०/१६ के सामने।
स्वर्गद्वारेश्वर—स्वर्गद्वारी महल्ले में। मकान नं० सीके० १०/१६ में।
स्वर्णाक्षेश्वर—ढुंढिराजगली में दंडपाणि के मन्दिर में। मकान नं० सीके० ३६/१०।

स्वर्लीनतीर्थ—स्वर्लीनेश्वर के सामने गंगाजी में। प्रह्लादघाट के उत्तर पूर्व।

स्वर्लीनेश्वर—नया महादेव नाम से प्रसिद्ध। प्रह्लादघाट के पूर्व। मकान नं० ए० ११/२९।

हनुमदीश्वर—वर्तमान स्थान हनुमान घाट पर मढ़ी में।

हयकंठीदेवी—लक्ष्मीकुण्ड पर। कालीमठ में मकान नं० डी० ५२/३५ में खिन्नी के पेड़ के नीचे।

हयग्रीवकेशव—भदैनी में। मांआनन्दमयी अस्पताल के पास।

हयग्रीवतीर्थ—हयग्रीवकेशव के सामने कुंड। लुप्त।

हरसिद्धिदेवी—मणिकर्णिका घाट पर सिद्धिविनायक के पूर्व में।

हरंपापतीर्थ—केदारघाट के सामने गंगाजी में। प्रतीकरूप से गौरीकुण्ड नामसे केदारघाट पर का कुण्ड।

हरिकेशेश्वर—जंगमवाड़ी में मकान नं० डी० ३५/२७३ में।

हरिश्चंद्रतीर्थ—सेंधियाघाट के उत्तर। हरिश्चन्द्रेश्वर के नीचे गंगाजी में।

हरिश्चंद्रमंडप—हरिश्चन्द्रेश्वर का वर्तमान मंदिर। यहीं पर धर्मराज ने महाराज हरिश्चन्द्र को दर्शन दिया था। मकान नं० सीके० ७/१६६।

हरिश्चंद्रविनायक—हरिश्चन्द्र मंडपके बगलमें मकान नं० सीके० ७/१६५ में।

हरिश्चंद्रेश्वर—पुष्पदंतेश्वर के समीप।

हस्तिपालेश्वर—वृद्धकाल मंदिर में। मकान नं० के० ५२/३९।

हंसतीर्थ—विश्वेश्वरगंज के उत्तर, हरतीरथ का पोखरा।

हंसतीर्थद्वितीय—देखिये हरंपाप तीर्थ।

हिरण्यकूप—राजघाट के किले में राजपुत्रविनायक के समीप का कुआँ सड़क के दक्षिण।

हिरण्यगर्भतीर्थ—प्रह्लादघाट तथा त्रिलोचन घाट के बीच में गंगाजी में।

हिरण्यगर्भलिंग—त्रिलोचनघाट पर ऊपर मढ़ी में।

हुंडनमुंडनगण—(१) शैलपुत्री दुर्गा के मंदिर में मठियाघाट पर। (२) धूपचंडीदेवी के मंदिर में पिछवाड़े की ओर। वहीं हुंडनेश तथा मुंडनेश। मकान नं० जे० १२/१३४।

हुंडनेशमुंडनेश—(१) शैलपुत्री दुर्गा के मन्दिर में। (२) धूपचंडीदेवी के मंदिर में पीछे की ओर। मकान नं० जे० १२/१३४।

हेरंबविनायक—लहुराबीर की चौमुहानी से पश्चिम पिशाचमोचन की सड़क के उत्तर वाल्मीकि के टीले के ऊपर।

क्षिप्रप्रसादविनायक—पितरकुण्डा तालाब के पास पित्रीश्वर के मंदिर में। मकान नं० सी० १८/४७।

क्षीराब्धितीर्थ—आदिकेशव के सामने गंगाजी में।
क्षेमकगण—क्षेमेश्वर मंदिर में। मकान नं० बी० १४/१२ में।
क्षेमेश्वर—मकान नं० बी० १४/१२ कुमारस्वामीमठ क्षेमेश्वर घाट के ऊपर।
क्षोणीवाराह—दशाश्वमेध घाट पर मकान नं० डी० १७/१११ में।
क्षोणीवाराहतीर्थ—समीप में। लुप्त।
त्रिपुरांतकेश्वर—सिगरा में त्रिपुरांतक टीले पर। मकान नं० डी० ५६/६५।
त्रिपुरेश्वर—त्रिपुराभैरवी मंदिर में। मकान नं० ५/२४।
त्रिभुवनकेशव—वंदीदेवी के मंदिर में दशाश्वमेध घाट के ऊपर। मकान नं० डी० १७/१००। वहीं पर त्रिभुवनकेशव तीर्थ अव लुप्त।
त्रिमुखविनायक—सिगरा में त्रिपुरांतक के टीले पर। मकान नं० डी० ५६/६५।
त्रिलोकसुन्दरीदेवी—शीतलागली में पितामहेश्वर के द्वार पर की शीतला देवी।
त्रिलोचन—प्रसिद्ध। त्रिलोचन घाट के ऊपर।
त्रिविक्रम—त्रिलोचन मन्दिर में।
त्रिशूली—कृमिकुंडपर वावा कीनाराम की वैठक के पास। लुप्त।
त्रिसंध्य तीर्थ—दशाश्वमेध के दक्षिण गंगाजी में।
त्रिसंध्येश्वर—वर्तमान स्थान ललिता घाट पर मकान नं० डी० १/४० में।
त्र्यंवक—त्रिलोकनाथ नाम से प्रसिद्ध। मकान नं० डी० ३८/२१ वड़ादेव महल्ले में।
ज्ञानकेशव—आदि केशव के वगल में—इनके ही स्थान पर श्वेतद्वीप तीर्थ है।
ज्ञानमाधव—ज्ञानवापी के पास पाँचोपांडव मन्दिर में
ज्ञानवापी—विश्वनाथ जी के उत्तर। प्रसिद्ध।
ज्ञानविनायक—लांगलीश्वर मन्दिर में वाहर की कोठरी में। मकान नं० सीके० २८/४।
ज्ञानह्रद तीर्थ—पंचगंगा के दक्षिण गंगाजी में। ऊपर ज्ञानेश्वर थे, वे लुप्त हैं।
ज्ञानेश्वर द्वितीय—लाहौरीटोला में मकान नं० डी० १/३२ में।
ज्ञानोद तीर्थ—देखिये 'ज्ञानवापी'।

वाराणसी के प्रसिद्ध देवायतनोंका भौगोलिक वर्गीकरण

वरणासंगम—संगम, आदिकेशव, ज्ञानकेशव, केशवादित्य, संगमेश्वर, प्रयाग लिंग, वेदेश्वर नक्षत्रेश्वर। राजघाटकोट—खर्व विनायक, शांतिकरीगौरी, राजपुत्र विनायक।

प्रह्लादघाट—प्रह्लादेश्वर, प्रह्लाद केशव, विदार नरसिंह, पिचिंडिल विनायक, मातृपीठमें देवियाँ, ईशानेश्वर (दानेश्वर), गोप्रतारेश्वर, विमलेश्वर (नीलकंठ), वरद विनायक, स्वर्लीनेश्वर, यज्ञवाराह, शिवदूती, नृसिंह, प्राचीन मातृपीठ की देवियाँ, अग्नीश्वर। गोलाघाट—भृगुकेशव।

त्रिलोचनघाट के ऊपर—पंचाक्षेश्वर, नर्मदेश्वर, पादोदककूप, सुमुखेश्वर, वामनकेशव (मधुसूदन)।

पाटनदरवाजा—संहार भैरव। त्रिलोचन मन्दिर में—त्रिलोचन, वाल्मीकीश्वर, अरुणादित्य, वाराणसी देवी, उद्दंडमुंड विनायक, त्रिविक्रम, कोटीश्वर। आदिमहादेव में—आदिमहादेव, मोदकप्रिय विनायक, पार्वतीश्वर, महानादेश्वर, पार्वती देवी। कामेश्वर मन्दिर में—कामेश्वर, दुर्वासेश्वर, महोत्कटेश्वर, महाबलनृसिंह, दुर्वासाऋषि, खखोल्कादित्य, विनतेश्वर, गरुड़ेश्वर। कामेश्वर के पास—नलकूवरकूप, अघोरेशी देवी। त्रिलोचनघाट—प्रणव विनायक, हिरण्यगर्भ लिंग, सरस्वतीश्वर, शांतन्वीश्वर, भीष्मेश्वर, पिलिप्पिलातीर्थ। महथाघाट—नागेश्वर, नागेश विनायक, नरनारायणकेशव (वदरीनारायण)। गायघाट—नागेश्वर, नागेश्वरी, मुखनिर्मालिकागौरी। लालघाट—गोप्रेक्षेश्वर, गोपीगोविन्द, विन्दुमाधव। शीतलाघाट—नारायणी देवी, शंखमाधव। राजमन्दिर—लक्ष्मीनृसिंह, कर्णादित्य, शेषमाधव, विश्वनाथ, अन्नपूर्णा।

ब्रह्माघाट—ब्रह्माजी, ब्रह्मेश्वर—१, ब्रह्मेश्वर—२। दुर्गाघाट—खर्वनृसिंह—१ खर्वनृसिंह—२, ब्रह्मचारिणीदुर्गा। पंचगंगाघाट—धौतपापेश्वर, बिंदुमाधव,

रेवंतेश्वर, पंचगंगेश्वर, राम मन्दिर (कंगनवाली हवेली)। मंगलागौरीघाट—मंगलागौरी, गभस्तीश्वर, मुखप्रेक्षणिका, मयूखार्क, मंगल विनायक, मंगलोद-कूप, चर्चिका देवी। रामघाट—कालविनायक, वीर रामेश्वर।

बीबीहटिया—धनधान्येश्वर, कामेश्वर, नलकूवरेश्वर। कालभैरव के समीप—आमर्दकेश्वर, कालमाधव, कालमर्दनेश्वर, पापभक्षण, नागेश्वर, महाकाल दंडपाणि (क्षेत्रपाल), नृत्यशालिनीदुर्गा, भैरवेश्वर, चक्रपाणि भैरव, काल भैरव, बिंदुमाधव-३, जमदग्नीश्वर, दंडपाणि भैरव, कालेश्वर, पांडवेश्वर। गोशाला—शुकेश्वर। सिद्धमाता की गली—सिद्धमाता।

अग्नीश्वरघाट—अग्नीश्वर, उपशांतशिव, भद्रेश्वर, नागेश्वर, नागेश विनायक, यमघाट—यमेश्वर, यमादित्य। गंगामहल—आश्विनेयेश्वर। संकठाजी के पास—संकठाजी, सगरेश्वर, कृष्णेश्वर, हरिश्चन्द्रेश्वर, हरिश्चन्द्र विनायक, वैकुंठमाधव, सीमाविनायक, सेनाविनायक, याज्ञवल्क्येश्वर, चिन्तामणि विनायक। वशिष्ठवामदेव मन्दिर—जनकेश्वर. याज्ञवल्क्य अथवा वशिष्ठ ऋषि, वशिष्ठेश्वर, वामदेवेश्वर, विश्वामित्रेश्वर, भारद्वाजेश्वर, अरुंधती। गली में—वैरोचनेश्वर, पांडवेश्वर, एकदंत विनायक। आत्मावीरेश्वर—वीरेश्वर, अंगारकेश्वर, बुधेश्वर, मित्र विनायक, वीरमाधव, बृहस्पतीश्वर, विश्वकर्मेश्वर, केदारेश्वर, वासुकीश्वर, पर्वतेश्वर। सिद्धेश्वरी मन्दिर—सिद्धयोगेश्वरी, चन्द्रेश्वर, चन्द्रकूप, कलिकालेश्वर, कोकावाराह, वाराहेश्वर। शीतलागली—पितामहेश्वर, त्रिलोकसुन्दरी, कुब्जादेवी, कुब्जांबरेश्वर, नलकूबरेश्वर, प्रपितामहेश्वर, महाभयहरनृसिंह। समीप में—कलशेश्वर, कलशकूप, अम्बा देवी। गोमठ के समीप—नीलसरस्वती, अत्युग्रनरसिंह, रुरु भैरव, कम्बलाश्वतरेश्वर (कमलेश्वर), मणिकर्णीश्वर, वरुणेश्वर, ज्योतिरूपेश्वर, कोलाहलनृसिंह, कंकालभैरव, हरसिद्धि देवी, सिद्धिविनायक, सिद्धिलक्ष्मी, विश्वा गौरी। मणिकर्णिका—मणिकर्णी देवी, चक्रपुष्करिणी, रुद्रावासेश्वर, दत्तात्रेयेश्वर, तारकेश्वर, महेश्वर, इन्द्रेश्वर, मणिकर्णीविनायक, भगीरथलिंग। ब्रह्मनाल स्वर्गद्वारी—भागीरथीश्वर, कूष्मांडेश्वर, पुलस्त्येश्वर, पुलहेश्वर, राजराजेश्वर, स्वर्गद्वारीश्वर, अंगिरसेश्वर, अमृतेश्वर, अमृतेश्वरी। नीलकंठ—नीलकंठ, ताम्रवाराह। लाहौरीटीला—मोक्षद्वारेश्वर, करुणेश्वर, त्रिसंध्येश्वर, भगीरथविनायक, ज्ञानेश्वर, मांधात्रीश्वर। ललिताघाट—काशीदेवी, ललितादेवी, भागीरथीदेवी, गंगादित्य, गंगाकेशव, वशिष्ठेश्वर, महापाशुपतेश्वर (नेपाल पशुपति)।

मीरघाट—वृद्धादित्य, आशाविनायक, श्वेतमाधव, शिवदूती, यज्ञवाराह, जरासंधेश्वर, तत्वेश। धर्मकूप—धर्मेश्वर, कांचनवट, धर्मकूप, विश्वभुजा-गौरी, दिवोदासेश्वर, धरणीश्वर, विशालाक्षी, विशालाक्षीश्वर।

अन्नपूर्णा विश्वनाथ के समीप—भीमेश्वर, मोदविनायक, प्रमोदविनायक, दुर्मुखविनायक, ऐश्वर्येश्वर, सुमुखविनायक, गंगेश्वर का स्थान, अविमुक्तेश्वर-१, तारकेश्वर का स्थान, महाकालेश्वर का स्थान, महेश्वर, ज्ञानवापी, वीरभद्रेश्वर का स्थान। विश्वनाथजी के घेरे में—विश्वेश्वर, व्यासेश्वर, शृंगारगौरी, कुवेरेश्वर, विनायक, निकुम्भ, कपिलेश्वर, विजयलिंग, महाकालेश्वर, दण्डपाणीश्वर, वैकुंठेश्वर, विरूपाक्ष, शनैश्चरेश्वर, अविमुक्तविनायक, विरूपाक्षीगौरी, विष्णु, अविमुक्तेश्वर, माहेश्वरी देवी। पास के रानीभवानी के मन्दिर में—तारकेश्वर। अक्षयवट में—देवयानीश्वर, नकुलीश्वर, द्रौपदी, द्रुपदादित्य। अन्नपूर्णाजीमें—अन्नपूर्णा, कुवेरेश्वर। राम मन्दिर में—भवानीगौरी, भवानीश्वर। ढुंढिराज-१ ढुंढिराज-२ (रानी भवानी के मन्दिर में ऊपर), ढुंढिराज-३ (गीतावाई के पंचमुखीगणेश), अपारनाथ मठ में—देवदेव, ब्रह्मावर्त कूप। ढुंढिराज गली में—गणनाथविनायक, राजराजेश्वर, प्रतिग्रहेश्वर, परद्रव्येश्वर, परान्नेश्वर, निष्कलंकेश्वर, वरुणेश्वर (करुणेश्वर द्वितीय), स्वर्णाक्षेश्वर, दंडपाणि, मार्कंडेयेश्वर। पाँचोपांडव—पांडवेश्वर, संवर्तेश्वर, श्वेतेश्वर, द्वारविनायक, ज्ञानमाधव।

खोवाबाजार—लांगलीश्वर, ज्ञानविनायक। कोतवालपुरा—यक्षविनायक। साक्षीविनायक के समीप—साक्षीविनायक, प्रीतिकेश्वर, मनःप्रकामेश्वर, कलिप्रियविनायक, कोटीश्वर। सकरकंदगली—ब्राह्मीश्वर, चतुर्वक्त्रेश्वर। कालिकागली—शुक्रेश्वर, कचेश्वर, शुक्रकूप, सृष्टिविनायक, चंडीचंडीश्वर, कालरात्रि दुर्गा। नेपाली खपड़ा की गली में—मदालसेश्वर।

त्रिपुराभैरवी घाट के ऊपर—वाराही देवी, त्रिपुरा भैरवी, त्रिपुरेश्वर, रुद्रेश्वर। मान मन्दिर घाट—सोमेश्वर, रामेश्वर, दाल्भ्येश्वर।

दशाश्वमेध—प्रयागेश्वर (ब्रह्मेश्वर) शूलटंकेश्वर, अभयदविनायक, प्रयागमाधव, चोणो वाराह, वराहेश्वर, वन्दी देवी, त्रिभुवनकेशव। शीतला मन्दिर में मातृकाएँ, दशहरेश्वर, दशाश्वमेधेश्वर।

राणामहल—कुक्कुटेश्वर, वक्रतुंडविनायक (सरस्वती विनायक), योगिनीपीठ। पांडेयघाट—सोमेश्वर, सर्वेश्वर। नारदघाट—अत्रीश्वर, आनुसूयेश्वर, नारदेश्वर, वासुकीश्वर। क्षेमेश्वरघाट—क्षेमेश्वर, क्षेमक गण।

चौकीघाट—रुक्मांगदेश्वर। पातालेश्वर महल्ला—जटीपातालेश्वर, पुष्पदंतेश्वर, एकदंत विनायक।

बालमुकुन्द का चौहट्टा—ब्रह्मेश्वर, ब्राह्मीदेवी, सिंहतुंड विनायक। अगस्त्य-कुंडा महल्ला—अगस्त्येश्वर, विश्वावस्वीश्वर, भूतधात्रीश्वर (भूतेश्वर), गरुड़ेश्वर। जंगमवाड़ी—कश्यपेश्वर, पुलस्त्येश्वर, हरिकेशेश्वर, अंगिरसेश्वर, विमलादित्य।

केदारेश्वर के समीप—चित्रांगदेश्वर, चित्रग्रीवा देवी, नीलकंठ, महालक्ष्मी। केदार मन्दिर में और केदारघाट पर—केदारेश्वर, विटंकनरसिंह, तारकेश्वर, गौरीकुंड, निष्पापेश्वर। लालीघाट—जयन्तलिंग, जेष्ठ विनायक, किरातेश्वर। ऊपर सड़क पर—लम्बोदर विनायक (चिन्तामणि विनायक)।

हरिश्चन्द्रघाट—वृद्धकेदार, आदिमणिकर्णिका तथा हरंपाप तीर्थ। हनुमानघाट—रामेश्वर, हनुमदीश्वर, सीतेश्वर, लक्ष्मणेश्वर, भरतेश्वर, रुरु भैरव। बादशाहगंज—स्वप्नेश्वर, स्वप्नेश्वरी।

शिवालाघाट—हयग्रीवकेशव। तुलसीघाट—लोलार्क कुंड, भद्रेश्वर, पाराशरेश्वर, अमरेश्वर, स्वप्नेश्वर, स्वप्नेश्वरी (महिषमर्दिनी), अर्कविनायक, चामुंडा।

असि सगम—शुष्केश्वर (शुक्रेश्वर), बाणेश्वर, असिसंगमेश्वर, मयूरेश्वर, कुंडोदरेश्वर, असिसंभेद। पुष्कर—अयोगंधेश्वर कुंड (पुष्कर तालाव), अयोगंधेश्वर।

दुर्गाजी के समीप—संकटमोचन, दुर्गाजी, दुर्गाकुंड, तिलपर्णेश्वर, चंडभैरव, काली (महारुंडा की प्राचीन मूर्ति), लक्ष्मी, सरस्वती, प्रचंडनरसिंह का स्थान (मूर्ति लुप्त), कुक्कुटेश्वर, द्वारेश्वर, द्वारेश्वरी (जलहरेश्वरी), दुर्गविनायक, शिवपार्वती विग्रह।

गोआवाईकुंड—मुकुटकुंड, अंगारेशीचंडी (पंचकौड़ीदेवी)।

शंखूधारा—शंकुकर्णेश्वर, द्वारकाधीश, द्वारकेश्वर। कोल्हुआ—कहोलेश्वर, डौंड़ियावीर—विभांडेश्वर। कमच्छा महल्ला—कामाच्छा देवी, क्रोधन भैरव, अंगारेशीचंडी, अंगारेश्वर, अंगारेश्वर कुंड (लोहित कुंड), वटुक भैरव, घृष्णेश्वर (श्रवणेश्वर), वैद्यनाथ (वैजनत्था)।

रामकुड—रामेश्वर, स्वयंभुलिंग, सीतेश्वर, लवकुशेश्वर। लक्ष्मीकुंड—महालक्ष्मी कुंड, महालक्ष्मीश्वर (सोरहियानाथ), शृंगीऋषि, ऋष्यशृंगेश्वर, (लुप्त), हयकंठी देवी, करवीरेश्वर, महालक्ष्मी, काली, शिखिचंडी, श्री देवी

(आदिलक्ष्मी), कूणिताक्ष विनायक, मंडविनायक, श्रीकंठ लिंग। सूर्यकुंड—साम्वादित्य, साम्वादित्य कुंड (सूर्यकुंड), दीप्ताशक्ति, द्विमुख विनायक। ध्रुवेश्वर—चतुर्दंत विनायक, ध्रुवेश्वर। कोदई चौकी—गोकर्ण, गोकर्णकूप, वैद्यनाथ, पुरुषोत्तम भगवान, त्र्यंबकेश्वर (त्रिलोकनाथ)।

गोदौलिया—मुचकुंदेश्वर, गौतमेश्वर। बाँसफाटक—समुद्रेश्वर, ईशानेश्वर, गजकर्णविनायक, आदिविश्वेश्वर, सौभाग्यगौरी। घुंघरानी गली—राजराजेश्वर।

राजादरवाजा—भारभूतेश्वर, गजविनायक, आषाढ़ीश्वर, चित्रगुप्तेश्वर, चित्रकूप, किरातेश्वर-१, किरातेश्वर-२। हड़हा महल्ला—अस्थिक्षेप तड़ाग, (हड़हा-ताल , हाटकेश्वर (पुरानी गुदड़ी में), कीकसेश्वर।

चौक—चित्रघंटविनायक—१, चित्रघंटविनायक—२, स्थूलजंघविनायक, चित्रघंटा देवी।

पशुपतीश्वर—पशुपतीश्वर, अवधूतेश्वर, अवधूतकुंड, गंगेश्वर, दिवोदासेश्वर, दिवोदास, परशुरामेश्वर, परशुराम विनायक। ठठेरीबाजार—शतकालेश्वर।

कर्णघंटा—व्यासेश्वर, पाराशरेश्वर, व्यासकूप, घंटाकर्णेश्वर (कंठेश्वर), घंटाकर्णह्रद (कर्णघंटा तालाव), काशीदेवी, गौरीकूप। सप्तसागर—ज्येष्ठेश्वर, ज्येष्ठविनायक, ज्येष्ठागौरी, कहोलेश्वर, पवनेश्वर, भृगुनारायण, कंदुकेश्वर, जैगीषव्येश्वर, भीषण भैरव (भूतभैरव), जयंतेश्वर, चतुःसमुद्र-कूप, निवासेश्वर (लुप्त), आषाढ़ीश्वर, दुर्वासेश्वर, भूतीश्वर। दीनानाथ-गोला—उटजेश्वर। औघड़नाथ की तकिया—तक्षकेश्वर।

पिशाचमोचन—पिशाचेश्वर, विमलेश्वर, पंचास्यविनायक, हेरंबविनायक।

पितरकुंडा—पित्रीश्वर, छागलेश्वर, क्षिप्रप्रसादन विनायक।

औसानगंज—तालकर्णेश्वर (वालचन्द्रेश्वर), उर्वशीश्वर। नरहरिपुरा—जैगीषव्यगुहा, जैगीषव्येश्वर, आग्नीध्रेश्वर (यागेश्वर), अग्नि कुंड (ईश्वर गंगी का तालाव)।

जैतपुरा—वागीश्वरी (महामुंडाचंडी), अश्वारूढ़ा, स्कंदमाता दुर्गा, महामुंडेश्वर, सिद्धेश्वर, ज्वरहरेश्वर, आम्नातकेश्वर। नागकुआँ—कर्कोटकवापी (नाग-कुआँ), कर्कोटकनाग, कर्कोटकेश्वर, दृमिचंडेश्वर (मल्लू हलवाई का मंदिर), वासुकि कुंड (नाग कुआँ के पश्चिम लुप्तप्राय), गंधर्व सरोवर (मीरन सागर),

सुप्रतीक सरोवर—कमाल गड़हा। धूपचंडी—ध्रुवचंडी देवी, विकटद्विज-विनायक, सूक्ष्मेश्वर।

सदरबाजार—चंडीश्वर, चंडीदेवी, पाशपाणिविनायक, मुंडविनायक।

विश्वेश्वरगंज—शिवेश्वर। हरतीरथ—हंस तीर्थ (हरतीरथ का पोखरा), वृषरुद्र।

वृद्धकाल के समीप—कृत्तिवासेश्वर, सतीश्वर, रत्नेश्वर, श्रुतीश्वर, अम्बिकेश्वर, अग्निजिह्ववेताल, अमृतकूप, अपमृत्युहरेश्वर (महामृत्युंजय)। वृद्धकाल के घेरे में—मातलीश्वर (मालतीश्वर), महाकाल, वृद्धकालेश्वर, भीष्मकेशव, स्वयंभूत विनायक, अन्तकेश्वर (अव्दतीश्वर), ऐरावतेश्वर (देवराजेश्वर), धन्वंतरीश्वर, वैद्यनाथ कुंड, शैलेश्वर, सिद्धेश्वर, असितांग भैरव, सर्वेश्वर, हलीशेश्वर, लोमशेश्वर, जनकेश्वर कश्यपेश्वर, दक्षेश्वर, हस्तिपालेश्वर, मार्कंडेयेश्वर, कालोदककूप, नागेश्वर, चतुर्मुखेश्वर।

दारानगर—चित्रेश्वर। मध्यमेश्वर महल्ला—मध्यमेश्वर, भद्रकाली–१, भद्र-काली–२, विश्वेदेवेश्वर, वीरभद्रेश्वर, आशापुरी देवी, मंदाकिनीतीर्थ (मैदागिन का पोखरा), आपस्तंबेश्वर। बड़ेगणेश पर—महाराज विनायक, दंतहस्त विनायक, जम्बुकेश्वर, सिद्ध्यष्टकेश्वर।

हनुमान फाटक—सुमन्त्वीश्वर, सुमन्त्वादित्य। धनदेश्वर कुण्ड (धनेसरा ताल), धनदेश्वर (बाबा नृसिंहदास के मठ में), विश्वकर्मेश्वर। मढियाघाट—शैलेश्वर, शैलेश्वरी, (शैलपुत्रीदुर्गा), हुंडनेश, मुंडनेश। अमरकह्लद (अमरैयाताल), लाट भैरव, पापमोचनतीर्थ (नौवा पोखरा), ऋणमोचनतीर्थ (लड्डू गड़हा), ओंकारेश्वर, अकारेश्वर, मकारेश्वर, कपालमोचनतीर्थ, विमलेश्वर कुण्ड (नौगिखरीगड़हा)। रुद्रावासतीर्थ (सुग्गी गड़ही)।

ककरहाघाट—प्रयागलिंग, शांतिकरी गौरी।